सैलाणी

नित्यपाठ सैलाणी भावार्थी टीका सहित

ज. गु. श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी

पूर्वाद्य ज.गु. श्रीरामजी

ज. गु. श्री स्वामी अग्रदासजी महाराज

श्री स्वामी संतदासजी महाराज 'वैरागी'

श्री स्वामी हरिरामजी महाराज 'वैरागी'

श्री स्वामी जीयारामजी महाराज 'वैरागी'

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज 'वैरागी'

श्री स्वामी अचलरामजी महाराज 'वैरागी'

श्री रामप्रकाशाचार्यजी 'अच्युत'
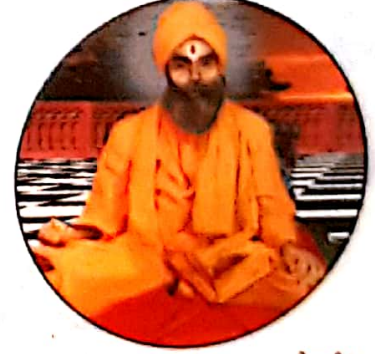
श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज 'वैरागी'

श्री वैष्णव आचार्य पीठ के परमाचार्य दर्शन

ॐ

सैलाणी

सद्गुरु वाणी - आध्यात्मिक साधना

रचयिता :

तत्त्वदर्शी स्वामी श्री अचलरामजी महाराज

सम्पादक/टीकाकार :

स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'

उत्तम प्रकाशन, जोधपुर

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342 006

दूरभाष (0291) 2547024, मोबा. 94144 18155

❖ प्रकाशक :

संत श्यामदासजी महाराज

महन्त-उत्तम आश्रम सत्संग भवन

गोविन्द कालोनी, विष्णु फैक्ट्री के सामने

श्रीविजयनगर - 335704 जिला श्रीगंगानगर (राज.)

मोबाइल : 9610095210

❖ **ISBN : 81-86103-32-0**

❖ प्रथम पुष्प : 2011 वि. सं. : 2068

❖ मूल्य : पन्द्रह रुपये मात्र (15.00)

❖ टाइपसेटिंग :

उत्तम कम्प्यूटर, जोधपुर

Mob. : 98285-24080

मुद्रक :

हिंगलाज ऑफसेट प्रिंटर्स

जोधपुर

दो शब्द...

किसी भी ग्रन्थ के लिए भूमिका एक औपचारिक परम्परा का पालन मात्र नहीं है अपितु यह उस ग्रन्थ में प्रवेश के लिए आवश्यक द्वार है। किसी विस्तृत क्षेत्र में शस्य के उत्पादन की इच्छा होने पर किसी अल्प भूमि में बीज-वपन कर अंकुरित होने पर उसे अभीष्ट विस्तृत भूमि में आरोपण करने पर विपुल परिमाण में शस्य की उपलब्धि होती है, दुरूह तत्त्वबहुल एवं अनुभवसिद्ध किसी ग्रन्थ में कहे गये विषयों को भूमिका से अवगत करने की क्षमता प्राप्त होती है। अत: लघुग्रन्थ के लिए भी भूमिका का निर्वहन आवश्यक है।

वैदिक संस्कृति 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' का गान करती हुई सर्व दर्शनों का एक ही परमतत्त्व में पर्यवसन करती है। अनुभवसिद्ध महापुरुष जिज्ञासुजनों को सदा पारमार्थिक स्तर से अपने अनुभवगम्य मार्गदर्शन का रसास्वादन कराते रहते हैं। साधक जब तुरीय अवस्था का अधिकारी हो जाता है तब वह कालातीत होकर सभी महापुरुषों से संचार करने लग जाता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में उसी धरातल पर संत श्रीकबीर साहब द्वारा पूर्व कथित प्रश्नों और परम विद्वान् स्वामी श्री सुखरामजी महाराज द्वारा

दिये उत्तर अर्थात् द्वादश-प्रश्नों का संवाद उसी धरातल में कालातीत अनुभवसिद्ध संचार का ज्वलन्त उदाहरण है। उसके साथ ही स्वामी श्री अचलरामजी महाराज विरचित 'सैलाणी' ब्रह्म प्राप्ति का सरल एवं सुगम मार्ग का उद्बोधन करती है—

'आ सैलानी परमान, श्रुति स्मृति सब ऐसे कहे।
रस्ता अनेक पिछान, सिद्धान्त सब का एक ही।।

(सैलानी, 89)

पूर्व 'अचलराम भजन प्रकाश' में प्रकाशित सैलाणी को जिज्ञासु जनों के उपकार के लिए पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्यजी महाराज ने बाल बोधिनी 'भावार्थी' नामक टीका से इस सैलाणी को लघु पुस्तिका का आकार देकर मुमुक्षुओं के लिए महद् उपकार किया है।

ग्रन्थ प्रकाशन में उत्तम आश्रम सत्संग भवन श्रीविजयनगर के व्यवस्थापक संत श्यामदासजी महाराज ने आर्थिक सहयोग वहन कर गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष में सभी जिज्ञासु-भक्तों को गुरु-दरबार का यह अनुपम आशीर्वाद प्रदान किया है।

गुरुकृपाकांक्षी

गुरुपूर्णिमा
संवत् 2068

संत जानकीशरण शास्त्री

ॐ

तत्त्व दर्शन

[निर्गुण परमात्मा रमणीय रमताराम के विषय में संत श्री कबीर साहब के द्वादश प्रश्न, जिनके उत्तर स्वामी श्री सुखरामजी महाराज ने बड़े अनुभव और युक्ति प्रमाणों से दीये हैं। उन प्रश्नोत्तरों को पाठकों के विचारार्थ भावार्थी टीका सहित यहाँ प्रस्तुत करते हैं।]

संत श्री कबीर साहब के द्वादश प्रश्न

रेखता छन्द

राम ही राम तुम कहत हो प्राणियां,
कहोजी राम का[1] रूप कैसा?
कौन सी[2] कोटड़ी आदि स्थान है,
कौन सा[3] महल में राम रहेसा।।
कौन सी सुन्दरी[4] रमे सुख सहज में,
मिल रही पीव से एक संगा।
मिल रही पीव से द्वैत दरसे नहीं,
नारि अरु पुरुष का एक अंगा।।1।।

हे मानव देहधारी प्राणियों ! आप सब जो राम-राम कह रहे हो, (1) कहो जी राम का रूप कैसा है ? (2) वह कौनसा स्थान है जहाँ राम की कोठी है ? (3) वह कौन सा महल है जहाँ राम रहते हैं ? (4) वह कौन सी सुन्दरी के साथ सुख शय्या में रमण करते हैं ? जो पिव के साथ एक रूपता से मिल रही है, जहाँ द्वैत का दर्शन नहीं होता। वहाँ नारी और पुरुष का एक ही अंग है।

कहो जी राम की कौन सी[5] अवस्था,
बहुत जवान के वृद्ध बाला।
कहो जी राम का कौन सा[6] रंग है,
श्याम हरि पीत के श्वेत लाला॥
कौन सा तखत पर[7] आप बैठा करे,
कौन सी ठौड़ जहाँ छत्र[8] छाया।
उपजे खपे नहीं पिण्ड पायक नहीं,
उनका दीदार[9] तुम कैसे करि पाया ॥2॥

(5) कहो जी राम की अवस्था कौन सी है ? वह बालक है ? जवान है ? वृद्ध है ? (6) कहो जी राम का रंग कैसा है ? कौन सा है ? वह श्याम है, हरा है, पीला, श्वेत या लाल है ?

(7) राम किस तख़्त पर बैठा करते है ? (8) किस जगह पर छत्र-छाया लगाते है ? वह उत्पन्न-प्रलय (जन्म-मृत्यु) रहित है, जिसके पिण्ड (शरीर) या सेव्य-सेवक नहीं है। (9) उनका दीदार आपने कैसे पाया ?

आवे नहीं जावे नहीं मरे नहीं जन्मे नहीं,
अलख[10] किसने लखा और किसने लखाया।
कहोजी राम का नाम[11] स्वर्ग से गिर पड़ा,
के भूमि फोड़ के निकस आया।।
इधर से सब गये सिद्ध[12] अरु साधक मौनी,
उधर की खबर कोऊ नहीं लाया।
कहै 'कबीर' उस शख़्स की तहकीक करो,
जिन राम का नाम जग में जनाया।।3।।

(10) वह राम आता नहीं, जाता नहीं, मरता नहीं, जन्मता नहीं, जो अलख है। उसको किसने लखा (जाना) और किसने लखाया (बताया) है ? (11) कहोजी राम का नाम स्वर्ग से गिर कर आया अथवा भूमि फोड़ कर निकल कर आया ? (12) इधर (यहाँ) से सभी गये, सिद्ध और साधक, मौनीजन, उधर (वहाँ) की खबर कोई नहीं लाया ? संत कबीर साहब जी कथन

करते है कि उस साधक स्वरूप की तहकीक करो, अन्वेषण करो, जिन्होंने राम के नाम को संसार में लखाया अथवा बताया।

हम वासी उस देश के जहाँ जाति वर्ण कुल नाहि।
शब्द मिलावा हो रहा, देह मिलावा नाहि॥

हम तत्त्वदर्शी जन उस देश (स्थान) स्तर के निवासी (मार्गी) हैं, जहाँ जाति, कुल, वर्णाश्रम का कोई परिचय नहीं है, केवल शब्द ब्रह्म ही हमारी पहचान है।

पूर्वाचार्य ऋषि-मुनि, महात्मा, तत्त्वदर्शी जन हुए, यद्यपि उनसे हमारा कोई शारीरिक (देह-आयु-काल) रूप से मिलना-मिलाप नहीं हुआ है, फिर भी उनके शब्दों से हमारे शब्द एकरूप साम्य तादात्म्य भाव रखते है।

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज कृत
पूर्वोक्त प्रश्नों के उत्तर

दोहा छन्द

प्रश्न युक्ति अद्‌भुत अति, रहस लखी नहीं जाय।
कबीर साहब मम उर बसो, कहूँ अरथ समझाय॥1॥

हे कबीर साहब ! आपके प्रश्न अति युक्ति संगत, गूढ़ एवं अतिशय अद्‌भुत हैं। इस रहस्य को जाना नहीं जा सकता, लखने से परे है। किन्तु आप हमारे हृदय में निवास करो, सरलार्थ रूप से पद्यात्मक अर्थ करके जन हितार्थ कहता हूँ।

रेखता छन्द

सुनोजी राम[1] का रूप ऐसा है,
अगम अरु निगम दोई कहै जी वेणा।
पांच ही तत्त्व गुण तीन ते है परे,
निरखिया निरत गुरु गम नेणा।।
निरखिया राम शोभा ऐसी है,
अनन्त ही सूर्य एक रोम तेजु।
सूरज का तेज तो तप्त अरु शीतल,
राम का रूप निर्मल सेजु।।2।।

हे महामना ! सुनो !! राम का रूप ऐसा है, जिसको वेद और शास्त्र दोनों की वाणी कथन करती हैं – वह पाँच तत्त्व और तीनों गुणों से अतीत है, सर्वथा परे है। गुरु की गम (रहस्य) से निरति (वृत्ति) के चक्षुओं से निरखा है। निरखने पर राम की ऐसी शोभा है कि एक रोम का तेज भी अनन्तों सूर्यों को भी शीतल कर दे अर्थात् फीका कर दे।

सूर्य का तेज तो तप्त (गर्मी) और कभी ठण्डा होता रहता है, बदलता रहता है, किन्तु राम का तेज नित्य, निर्मल, सहज, स्वरूपमय, स्वाभाविक एवं प्रकाशमय है।

सुनो जी कोटड़ी[2] आदि स्थान की,
परा से पार अरु बैखरी बारे।
चार वाणी नहीं चार खाणी नहीं,
चार ही अवस्था रही लारे।।
हद बेहद अनहद के ऊपरे,
शुन महा शुन के परे धामा।
अगम स्थान जहाँ इन को गम नहीं,
आप ही आप तहाँ रमे रामा।।3।।

हे महामानव! सुनो! राम की कोटड़ी जो आदि स्थान है। वह परा से पार (बाहर) और वैखरी के पार है। जहाँ चार (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी) वाणी नहीं पहुँच पाती और चार खाणी (अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज) भी नहीं है। चार अवस्था (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय) भी पीछे रह जाती है। वह हद (मायाजाल), बेहद (त्रिगुण रहित),

अनहद (दशवे द्वार के ऊपर अनहद दृश्य) शून्य-महाशून्य के पार अपेक्षाकृत नाम और रूप से परे है। वह अगम स्थान है, जिनकी चार वाणी, चार खाणी, चार अवस्था, हद, बेहद, अनहद इत्यादि के द्वारा भी गम (खोज) नहीं की जा सकती है। जहाँ केवल एक अद्वितीय राम ही रमण (व्यापक), रमणीय, सुन्दर, सौम्य, समर्थ है।

श्वेत ही शुन में शब्द[3] का महल है,
शब्द के महल में राम रहता।
समझ सी सुन्दरी रमे[4] सुख सहज में,
पीव से मिलि आनन्द लहता।।
रंग में रंग है संग में संग है,
रवि अरु किरण ज्यों एक रंगा।
मिल रहीं पीव से अद्वैत ऐसे वहीं,
अग्नि रु उष्ण ज्यों एक अंगा।।4।।

श्वेत (निर्विकल्प) अनन्त शून्यान्तर सत् शब्द का महल है। शब्द[3] के महल में राम (रमता) व्यापक तत्त्व से निवास करते हैं। विचारमग्ना समझ जैसी[4] सुन्दरी के साथ सुख-सहज में रमण करते हैं। जो पीव-परमात्मा से मिल कर आनन्द ले

रही है। ऐश्वर्य के रंग में रंगी तथा साथ ही साथ अभिन्नता पूर्वक जैसे सूर्य और किरण की भांति एक रंग में रंगे है। वह समझ बोध रूपा वृत्ति पीव-परमात्मा में अद्वय रूप से मिल रही है, जिसमें कोई द्वैत का दर्शन नहीं होता। वह ऐसी एक रूपा है, जैसे कि अग्नि से उष्णता (गर्मी) और चन्द्रमा से चाँदनी (रश्मि) की भांति एक हो रही है।

सुनोजी राम की कहाँ है अवस्था[5],
राम रमतीत सब माहि समता।
नाम और रूप की होत है अवस्था,
आदि बणे मध्य रहे अनन्त खपता॥
आदि रु मध्य पुनि अन्त उन का नहीं,
आदि से ही आदि अनादि वृद्धा।
अनन्त ही कोटि ब्रह्मण्ड पल में रचे,
ताहि ते बहुत जवान सरधा॥5॥

हे महामानव! राम की अवस्था[5] कहाँ और कैसी है, राम तो रमणीय रमतीत (रमता पुरुष) सर्व में, सब में सम्यक् भाव से समाया हुआ है। अवस्था तो नाम और रूप की होती है, जो आदि में बनता है, मध्य में रहता है और अन्त में नष्ट हो जाता

है। अतः उन राम का कोई आदि, मध्य और अन्त नहीं है। वे आदि से अनादि अर्थात् सृष्टि के आदि से पूर्व अनादि होने से वह अति वृद्धातिवृद्ध है और अनन्त करोड़ ब्रह्माण्ड की रचना एक पल भर में रच देते हैं। इसलिए उनकी श्रद्धा-शक्ति अति प्रबल तरुणाई से पूरित है।

श्रद्धा लियां राम रम रह्या ब्रह्मण्डों में,
नित नूतन बालक रूपा।
ताहि की महिमा कहो कौन कर सके,
करोड़ में कोई जन लीन स्वरूपा॥
सुनोजी राम का रंग[6] बेरंग है,
पांच ही रंग ते रंग जूवा।
पांच ही रंग बेरंग की सता से,
पांच पच्चीस बहुत भांति हूवा॥6॥

अपनी सम्पन्न श्रद्धा-शक्ति के साथ अनन्त ब्रह्माण्डों में राम रमण (व्यापक हो) कर रहे है। इस कारण से नित नये सदा बालक स्वरूप में ही है, उन की महिमा कौन महामानव कथन कर कह सकता है, करोड़ों तत्त्वदर्शी ज्ञानियों में कोई एक तत्त्वज्ञ उनके स्वरूप में लीन होते है।

सुनोजी! राम का रंग[6] बेरंग है, जो आकाश के श्याम, वायु के हरा, तेज के लाल, जल के सफेद और पृथ्वी के पीले अर्थात् इन पांचों रंगों से भिन्न बेरंग (रंग रहित) के है। इन पाँचों रंगों से उनका रंग सदा अलग ही है। यह पाँचों रंग उस बेरंग की सत्ता के आश्रित ही बहुरंग विश्व में प्रसिद्ध है। यह पाँच तत्त्व और पच्चीस को, विविध भाति से प्राकट्य उन्हीं से हुए हैं।

भांति ही भांति में रंग ही रंग में,
अचल बेरंग निर्वाण पूरा।
पाँच पच्चीस मन रंग को पेस कर,
बेरंग में लीन सोई सन्त सूरा॥
शूरमा ज्ञान अरु भक्ति वैराग में,
विमल विवेक से धोय हिरदा।
सन्त का हृदय सोई तखत[7] अति सुन्दर,
उसी को सब कोई करे सिरदा॥7॥

विविधता की भाँति भाँति के रंग ही रंग में समाहित वह बेरंग, कल्याणमय पूर्ण रूप से अचल अखण्ड है। शूरवीर-ज्ञान, भक्ति और वैराग से, विवेक-सत्संग से हृदय को धोकर

विमल हृदय के जो संशय रहित सन्तजन है, उन सन्तों का पवित्र हृदय है। वही अति सुन्दर[7] तखत है। उसी तखत को सभी जन नत मस्तक साष्टांग प्रणाम करते है।

सन्त हृदय मांहि आप बैठा करे,
सर्व ही ठोड़ जहाँ छत्र[8] छाया।
उपजे खपे नहीं पिण्ड पायक नहीं,
साहब कबीर तुम खूब गाया।।
पिण्ड सब अण्ड में अण्ड माया मांहि,
अण्ड माया परे अखण्ड अजाया।
मीन पिपील विहंग की राह कर,
देह बिन[9] हंस दीदार पाया।।8।।

निःसंशय ज्ञानी के हृदय में आप बैठते है और सर्वत्र सब ठाँ पर छत्र-छाया हुआ है। वह उत्पन्न होते नहीं, खपत (नाश) होता नहीं, पिण्ड (शरीर) और स्वामी-सेवक भी नहीं है। हे कबीर साहब! ऐसे राम को आप ने खूब (भली-भाँति से बहुत) कथन (जप) किया है। सभी जीव-जन्तु मात्र के स्थूलादि शरीर अण्ड (ब्रह्माण्ड) में है और वह ब्रह्माण्ड माया में निहित

है। वे इन ब्रह्माण्ड और माया से परे (भिन्नाभिन्न) अखण्ड, जन्म रहित (अजाया) अजन्मा है।

वह मीन (मछली) शुभ कर्म-जल के आश्रित, पिपीलिका (चिंटी) योग-उपासना के द्वारा अथवा विहंग (पक्षी) तत्त्व चिन्तन (ब्रह्मज्ञान) के मार्ग द्वारा शरीर के बिना जीवात्मा-चिदाभास युत कूटस्थ रूप शुद्ध लक्ष्यार्थी जीवन्मुक्त हंस ज्ञानीजन ऐसे स्वरूप की प्राप्ति करते हैं।

आवन अरु जावन की मिट गई कल्पना,
जनम अरु मरण सब भ्रम भागा।
हंस परिहंस ते अंश अरु वंश एक है,
आन उपाधि को कहाँ मागा।।
आन उपाधि इन्द्रिय गुण गोचरे,
इन्ही के बीच भर अलख रहेता।
सतगुरु सेन सत शब्द से मिल कहीं,
सुरत अरु निरत[10] शिष लख लेता।।9।।

आने-जाने की समस्त कल्पना मिट गई, जन्म और मरण का सर्व भ्रम निवृत्त हो गया। हंस (जीव) परिहंस (परमात्मा)

का चिदाभास (अंश) और कूटस्थ (वंश) बिम्ब-प्रतिबिम्ब सब उसी परम तत्त्व राम के है। अन्य किसी उपाधि के लिये कोई निहित स्थान (जगह) नहीं है। देह-इन्द्रियाँ, तीन गुण, इन्द्रियजन्य देव-विषय गोचर इत्यादि जो भी अन्य उपाधि रूप भासित भासते है। इन सभी के बीच व्यापक-व्याप्य वही अलख राम है, जो भेद रहित अभेद अर्थात् अद्वितीय है।

सन्तजन, सद्गुरु की सेन और सत् शब्द प्रणव से मिल कर सुरत (कर्णवृत्ति), निरत (चक्षुबृत्ति) सहित सद्गुरु का शिष्य (जो साधन चतुष्टय सम्पन्न हो) श्रवण, मनन, निदिध्यासन से साक्षात्कार करके जान लेता है।

लख सब गोचरे अलख अगोचरे,
अलख की लख को अलख लखता।
सत चेतन आनन्द अपार है,
आप हि आप नहीं मौन बकता॥
सुनोजी राम का नाम नहीं स्वर्ग गिरा भूमि फटा[11],
राम के नाम को सन्त लाया।
राम से अरस रु परस दीदार है,
उन्होंने आय जग माहि गाया॥10॥

जो भी जानने, देखने, सुनने में नाम-रूप का दृश्य-श्रव्य है, वह सब गोचर (इन्द्रिय) जन्य है। किन्तु जो अलख है, वह अगोचर (मन-वाणी और इन्द्रियातीत) है। लखने जानने से परे जो अलख है, वह सर्व का लखता अर्थात् जो नाम-रूप लखने की वस्तु है, उन सब को अलख भली-भाँति लखता है। सत् (त्रिकाल अबाध्य), चित् (चेतन, सर्व शक्तिमान), आनन्द (सर्व क्लेश से रहित) अपार असीम है। वह अद्वय आप ही स्वयं है, जो न मौन है और वक्ता भी नहीं है।

हे महामना ! सुनो !! राम का नाम न तो स्वर्ग (आकाश) से गिरा और न ही पृथ्वी फटने से बाहर आया। राम के नाम को सद्गुरु प्रदत्त सत्शब्द साधना से संशय से तरने वाले, परोपकारी, परहितकारी, विसंवादाभाव (शंका-संशय रहित) से सन्तजन लाये। जिनका राम से अरस-परस साक्षात्कार दीदार है, उन्होंने आकर जगत् में कथन अर्थात् प्रचारित किया।

शिव सनकादि सप्त हि महर्षि,
बाल्मीकि वसिष्ठ नारद मौनी।
और ही सन्त अनन्त ही उद्धरिया,
राम का नाम से अभय अयोनी॥

उधर की बात सब सन्त सतगुरु[12] कही,
इधर सुण प्रेम से हंस पूगा।
लगन में मगन निज नाम मोती चुगे,
इधर से उधर मिल भया गूँगा ॥11॥

शिव, सनकादि (सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार), सप्त महर्षि (गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, कश्यप, जमदग्नि, वसिष्ठ और अत्रि), वाल्मीकि, नारद एवं मौनी जन और भी अनन्त सन्तों ने राम के नाम से उद्धार पाया। वे राम के नाम से निर्भय तथा जन्म-मरण रहित अयोनिज भी हुए हैं।

उधर (वहाँ) की बात सब सन्तों सहित सद्गुरु ज्ञानी जनों ने बखान कर कही और इधर (यहाँ) सभी जिज्ञासुओं-मुमुक्षूजनों ने सुनकर प्रेम किया, वे सभी हंस परम धाम अटल, स्थिर, निश्चल धाम में पहुँच गये। वे सभी लगन से मगन होकर श्रद्धा-भक्ति से नाम का मोती (स्मरण-भजन) चुगने लगे। यहाँ से वहाँ पर जाकर राम से मिलकर लय हो गये या मौनी होकर अवाच्य पद में (मन-वाणी से परे) मौनी हो गये।

अब गूँगा बिन गिरा उचार ऐसा किया,
श्रवण बिन सुने सो समझ पाया।
अनन्त ही कोटि जन धाम एक राम में,
किया बहु राह कर धाम आया।
कहै 'सुखराम' सो शख्स कबीर है,
बेरंग में लीन हो राम गाया ।।12 ।।

अब उन गूँगे ने बिना वाणी के ऐसा उच्चारण किया कि बगैर कर्मेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रिय के अर्थात् बिना श्रवण सुनकर समझ लिया। उस समझ में ही रमझ (सेन) अनुभव है और उसी रमझ (सेन) की गम में ही एक राम है। बहुत से भक्ति,ज्ञान, कर्म, योग क्रिया के मार्ग से बह कर राम के धाम पहुँच गये हैं।

स्वामी सुखरामजी महाराज कथन करते है, वह योगयुक्त पुरुष शख्स समर्थ कबीर है, **क**=शब्द-ग्रन्थि, आत्म प्रकाश, **बी**=बीहल-सरल, प्रेम-मूर्ति, **र**=पाव के समान रमता— जिन्होंने बेरंग में लय लीन होकर राम का कथन किया।

।। इति कबीर-सुखराम सन्त संवाद प्रश्नोत्तर समाप्त ।।

तत्त्वदर्शी स्वामी श्री अचलरामजी महाराज कृत सटीक

सैलाणी

हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, राजयोग और ज्ञानयोग का सारांश

ब्रह्म प्राप्ति का सरल मार्ग दर्शन

सोरठा छन्द

प्रथम करूँ परणाम, विधि संयुक्त गुरुदेव को।
पूर्ण भया सब काम, अनुभव वाणी परकटी ॥१॥

सर्वप्रथम पत्र-पुष्प हाथ में लेकर सद्गुरुदेव के चरणार्विन्द में अर्पित करके विधिपूर्वक, श्रद्धा-विश्वास सहित साष्टांग दण्डवत (दो हाथ, दो पैर, दो चक्षु, छाती, मन, वाणी और शीश, पद) परिक्रमा करके एवं पद्मासन से बैठकर प्रणाम करता हूँ। जिनकी कृपा से हमारे जीवन के सर्वकार्य (अज्ञान निवृत्ति, भवसागर के भय से मुक्ति, मानव जीवन का लक्ष्य, आत्म साक्षात्कार इत्यादि) कार्य विशेष सम्पन्न हुए और साधना से प्राप्त होने वाली वाणी का उद्भव हुआ।

सतगुरु सब का मूल, जिने निवाया सब निवे।
डाल पात फल फूल, देवादिक गुरु आसरे ॥२॥

सनातन धर्म में गणपति, विष्णु, शिव, सूर्य और शक्ति – इनको पंचदेव कहा जाता है। ये पंचदेव मूलरूप में सद्गुरु के ही स्वरूप है, जिनको शीश नमन करने से सबको प्रणाम हो जाता है। जैसे एक वृक्ष के मूल में जल सींचने पर पूरे डाल, पत्ते, फूल, फल इत्यादि सब वृक्ष पंचांग को पहुँचता है और सब हरे-भरे प्रफुलित होते है। ऐसे सर्वदेव भी सद्गुरु के आश्रय से पूजित-पल्लवित होते हैं।

पारब्रह्म करतार, देवन हूँ का देव नित।
सुर नर सेवन हार, सब से मोटा सतगुरु ॥३॥

सद्गुरु देव साक्षात् परब्रह्म (शब्दमय निर्गुण) स्वरूप है, वही साकार स्वरूप में सभी देवताओं के भी देव परमदेव है अर्थात् जब भी देवताओं पर संकट आया, तब सद्गुरु की शरणागत होने पर ही उन्होंने संकट से निवृत्ति पायी है। वही सद्गुरु जो देवता और मनुष्यों द्वारा पूजित है और वही उनकी सेवा-पूजा करते है। अतः सर्वाधिक महत्त्व सद्गुरुदेव का होने से सब से बड़े सद्गुरु ही है।

जिन मुझ पे की मेर, लखि सैलानी अगम की।
कछु नहिं लागी देर, आत्म पिछाना आप में ॥४॥

जिन सद्गुरुदेव ने हमारे पर कृपा दृष्टि की, जिससे जो गम से परे आत्मानुभव दुर्गम है। ऐसे अगम पद की सैलाणी अर्थात् निशानी अथवा पहचान जानी। इस कार्य में रंचमात्र की भी देर (समय सीमांकन का विलम्ब) नहीं हुई, कि स्वात्म तत्त्व अपने भीतर ही पहचान लिया।

रहता आप अबान, अगम अगोचर जान निज।
सब की पड़ी पिछान, निजानन्द निज जाण ते ॥५॥

जो आत्मतत्त्व वाणी रहित, नित्य स्वरूप से स्थित है, जो नाम-रूप की गम से परे है, अगम है। इन्द्रियों की पहुंच से निज तत्त्व के जानते ही सर्व व्यापक ब्रह्म, ईश्वर, कूटस्थ, चिदाभास संयुक्त प्रक्रिया सहित जीव इत्यादि सब की पहचान हो गई।

ब्रह्म जिज्ञासा

चौपाई

दीनानाथ अनाथ के स्वामी,
कृपा करी प्रभु अन्तरयामी।
कृपा करी ब्रह्म देश लखाई,
सैलानी निश्चय कहुँ भाई॥ ६ ॥

जो दीन-अनाथ (जिनका संसार में कोई नहीं उन) जनों के स्वामी, जो अन्तर्हृदय की अभिलाषा को जानने वाले अन्तर्यामी है। उन्होंने कृपा करी और दया करके सच्चिदानन्द पर स्थित विषय के ज्ञान की पहचान करवाई अर्थात् लखता (जानकारी) दी। हे भाई! उसकी सैलाणी (सहदानी या निशानी) कथन करके कहता हूँ।

लख कर भखूं अगम की भाखा,
सुरती सन्त कहै मम साखा।
अगम देश पहुँचा सो जाने,
निज अनुभव की बात पिछाने॥७॥

उन सद्गुरु द्वारा चर्चित तथ्य को जान कर के जो गम

(जानकारी) से परे अगम है, उनकी भाषा कथन करके कह रहा हूँ। जिसकी साक्षी वेद-शास्त्र का श्रवण करने योग्य श्रुति वाक्य है और संतजन भी हमारे आत्म तत्त्व (मम) की साक्षी देते हैं। जो कोई बिना अते-पते के अगम की निष्ठा (देश) में पहुँचा है, वही इसे जानते हैं। वे अपने या हमारे निज साधन सहित तत्त्व अनुभव की बात को पहचानते हैं।

सैलानी है ज्यूं बतलाऊँ,
निर्णय कर भिन्न भिन्न समझाऊँ।
पूर्व पुण्य जगा तब सूजी,
मानुष देह मिली मोहि पूंजी ॥८॥

जो निशानी स्वतन्त्र स्वात्म साधना के आनन्द की यात्रा सम्बन्धी सैलाणी है, वह जैसी है वैसी ही कथन करके बतलाता हूँ। बार-बार, अलग-अलग निर्णय-विचार करके समझाने का प्रयास करता हूँ।

सर्वप्रथम पूर्व के अनन्त जन्मों से ज्ञात-अज्ञात काल में प्राप्त हुए अनन्त पुण्य कर्मों के जाग्रत होने से विवेक-बुद्धि जाग्रत हुई, समझ आई। यह मनुष्य देह की अूमल्य निधि हमे धरोहर में मिली है, जो बार-बार मिलने वाली नहीं है। अवश्य

यह किसी विशेष कार्य के लिये ही प्राप्त हुई है।

पूंजी मिली आतमा खोजो,
लख चौरासी डारो बोजो।
और जनम में छूटे नाहीं,
देवादिक की योनि मांहीं॥९॥

कई जन्मों से एकत्रित हुए पुण्यों की अचल सम्पत्ति जो मिली है, इससे अपने तत्त्वरूप आत्मा का खोज लगाओ। पता लगाओं, क्योंकि जिसके बिना जीव को भवसागर में होने वाली समुद्र की लहरों की भाँति लख चौरासी की अनेक जातियों में पशु-पक्षी आदि योनियां भोगनी पड़ती है। इस पापों के बोझ से होने वाले भार ढोने के बोझ को दूर करो। यह भव बन्धन का भार अन्य योनि अर्थात् देव, किन्नर, गन्धर्व आदि किसी भी जन्म में छूटने वाला नहीं है। केवल मानव योनी में यह परमार्थ की पुरुषार्थ हो सकती है।

ऐसा चित्त में किया विचारा,
सो क्यों डूबे भव की धारा।
जलदी निकल समझ मन मेरा,
या जग मांहि कोई नहिं तेरा॥१०॥

इस प्रकार चित्त में चेतना से विवेकपूर्वक विचार किया, चिन्तन किया। हे मन! बार-बार इस भवसागर की धारा में क्यों डूब रहा है ?

हे मेरे (स्वाधिकार के) मन! समझ ले और इस भवसागर से शीघ्र निकल जाओ। इस दुःखत्रय (आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) की अग्नि में जलते हुए इस जगत् के दुःख में साथ निभाने वाला साथी कोई नहीं है।

स्वारथ हेत देव कर पूजे,
स्वारथ मिटे कोई नहीं बूजे।
बंधन बंधा स्वार्थ का सारा,
झूंठा सकल कुटुम्ब परिवारा ॥११॥

संसार पूरा स्वार्थ से बन्धा हुआ है, जब तक अपना स्वार्थ निकलता-मिलता रहेगा, तब तक स्वार्थ की पूर्ति के लिये तुम्हे देवता मान कर पूजते रहेंगे और जब स्वार्थ पूरा हुआ अथवा कमाने योग्य नहीं रहे, कमाई करके नहीं लाओगे या वृद्ध होने पर काम लायक नहीं रहोगे। ऐसी स्थिति में उनका स्वार्थ मिट जायेगा। तब तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं रहेगा। यह सारे लोग, सारा जगत्, माता-पिता, भाई-बन्धु, स्त्री-पुरुष इत्यादि स्वार्थ

के वशीभूत अपनी गर्ज से बंधे हुए हैं। यह सारा कुल-कुटुम्ब परिवार झूंठा है। न तो साथ में आया और न ही साथ निभानेवाला या जाने वाला है।

इन को त्याग मोक्ष पद लीजे,
अवसर बन्यो देर मत कीजे।
मोक्ष उपाय अवश्य की करणा,
याते ले सतगुरु का शरणा॥१२॥

अतः हे मन! इन स्वार्थ के संसार को छोड़कर मोक्ष के स्थायित्व परम पद की प्राप्ति करनी चाहिए। यह मानव जीवन की आयु रहते शुभ अवसर (पुण्य का समय) बन गया है, अब देरी मत करो।

अवश्य अपने कल्याणकारी भले के लिये मोक्ष प्राप्ति का उपाय (साधन) अवश्य करना चाहिए। इसके लिये सद्गुरु महाराज की शरण ले लो।

सतगुरु बिना मोक्ष नहीं सूजे,
किस को जाकर मारग बूजे।
तब आया सतगुरु पे भाई,
तन मन धन अर्प्या मन मांई॥१३॥

विचार किया कि सद्गुरु के बिना मोक्ष का मार्ग (साधन) दीखने में नहीं आता। अन्यत्र अन्य कौन है ? जिसको जाकर मार्ग (साधना) के लिए पूछा जाय ? इस प्रकार विचार किया। हे जिज्ञासु भाई ! तब सद्गुरुजी के पास आया और अपने मन के भीतर संकल्प शक्ति से तन-मन-धन सर्वस्व अर्पित कर दिया। अब आगे जो हुआ, जैसे सद्गुरु की शरणागत हो, प्रार्थना की गई का कथन है।

सतगुरु मिला जब परचा पाया,
अगम देश का राह बताया।
उलटा राह पंथ बिन बेना,
शीश काट सतगुरु को देना॥१४॥

जब सद्गुरु मिले, तब परिचय प्राप्त किया, सद्गुरुजी ने मन-बुद्धि की पहुँच से परे अगम (दुर्गम) स्थिति का मार्ग (साधन) बतलाया। यह साधना का मार्ग बगैर किसी के आधार (पन्थ) के बिना चलने का है। सर्वप्रथम तन-मन-धन अर्पण सहित विद्या, यौवन, जाति (वर्ण), प्रभुत्व, रूप-सौन्दर्य, कुलाभिमान सहित समस्त दुर्व्यसन-नशे के अहंकार रूप शीश काट कर सद्गुरु को भेंट देना चाहिए।

शीश चढा कर परसन कीजे,
यह नर देह वृथा गुरु छीजे।

शिष्य-शरणागति

मुक्ति युक्ति भाखो गुरु देवा,
चरणा रहूँ करूं नित सेवा॥१५॥

अपना सर्वस्व गुण-गौरवता का अभिमान (सिर) भेंट चढ़ा कर सद्गुरु को प्रसन्न करना और प्रार्थना करना कि हे गुरुदेव! यह मेरा मानव शरीर व्यर्थ में ही आयु से व्यतीत हो रहा है। अतः मुक्ति की युक्ति (जिस साधन से भव बन्धन से छुटकारा हो, वह विधि) कथन करके कह दो। हे गुरुदेव! मैं आपके चरणों की शरण में रह कर सदैव (आपकी आज्ञा एवं साधन) सेवा (श्रम) करता रहूँगा।

एक पलक विसरूं नहीं तुझ को,
असली भेद बताओ मुझ को।
जन्म मरण का दुःख अति भारी,
डर कर आयो शरण तुम्हारी॥१६॥

हे गुरुदेव! एक पल (छः श्वास के समय) भर भी आप

को भूलूँगा नहीं अर्थात् आपके उपकार को सदैव स्मृति पर याद रखूँगा। मुझे भव बन्धन के कर्म से मुक्त होने का वास्तविक भेद बतला दो।

भवसागर में बार-बार प्रत्येक योनि में जन्मते और मरते रहने का महादुःख है। गर्भवास में मल-मूत्र के बीच औंधे मुँह हाथ-पाँव सिकुड़कर काल कोटरी की भाँति, अंधेरी गुफा की तरह माता के उदर में रह कर संकड़ी सेरी से गुजरने का जन्म दुःख और अन्तिम समय शरीर की नाड़ियाँ टूट कर कण्ठ गत श्वास में घुरड़के, छाती पर रोंधने का वजन इत्यादि मरणें के महादुःखों का अनुभव हुआ। इन से भयभीत होकर डरता हुआ आप की शरण में आया हूँ।

लख चौरासी बंध छुड़ाई,
तुम गुरु स्वामी अलख गौसांई।
तारण तरण सदा स्वछन्दा,
जनम मरण का काटो फन्दा॥१७॥

हे गुरुदेव! आप सद्गुरु स्वामी (हमारे मालिक) हो, स्वयं परमात्मा हो, जिनको कोई जान नहीं सकता, ऐसे सर्व इन्द्रियों के विजेता अर्थात् मन, वाणी, इन्द्रिय के विषयों से परे साक्षात्

हो। आप देह बुद्धि से, भव से स्वयं तरणे और अन्य को तारणे वाले केवट है। जैसे नाव में केवट आप भी नदी पार होता है और अन्य को भी तारणहार होता है। वैसे ही आप अपनी इच्छा से (निर्गुण से सगुण रूप में) विचरण करके देह रूप में अवतरण होने में सदा स्वतन्त्र है। हमारे जीव के जन्म-मृत्यु की कर्म फांस को काटने की कृपा करो।

काया करम कौन विधि खूटे,
मोह की फांसी कैसे छूटे।
पांच पचीस पकड़ मम बैठा,
मोह जाल अलुझाया सेंठा॥१८॥

स्थूल (पांच तत्त्व और पच्चीस प्रकृति), सूक्ष्म (पांच कर्मेन्द्रिय, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि सहित सत्रह तत्त्व) और सप्त अवस्था पूर्ण चिदाभास के कारण (अज्ञान) रूप तीनों शरीर द्वारा हुए अनन्त जन्मों के संचित कर्म-बन्धन किसी विधि से खूट कर निवृत्त हो जाय। यह मोह (अज्ञान उपार्जित) मैं-मेरा, तूं-तेरा की मोह से बंधी फांसी किस तरह से मुक्त हो जाय।

यह पांच तन्मात्रा से उपार्जित पंचतत्त्व सहित पच्चीस प्रकृति समूह हमें चिदाभास (कूटस्थ को जीवभाव से) पकड़ बैठे है। इनमें इन्होंने मोह (अज्ञान) जाल में मजबूत उलझा दिया है।

आशा तृष्णा मुझे फिरावे,
भांति भांति का नाच नचावे।
रात दिवस मन में रह लागी,
एक पलक होवे नहीं आगी॥१९॥

आशा (इच्छा) और तृष्णा (वासनामयी ममता) दोनों हमें (चिदाभास सहित कूटस्थ जीव को) संसार के लोक-परलोक के बीच कई योनियों में भ्रमण करवाने के बाद भी इस जीवन को भी भांति-भांति के विविध तरह से नाच नचा कर भ्रम से भ्रमित करके भ्रमण करवा रही है।

यह रात दिन मन में लगी रहती है। एक क्षण भर भी दूर या निवृत्त नहीं हो रही है।

इन से जिन्द छुड़ावो मेरी,
जब दरशे निगमागम सेरी।

दृढ जिज्ञासा सतगुरु देखी,
कृपा दृष्टि कृपालू पेखी ॥२० ॥

उक्त कर्म, आशा, तृष्णा, मोह (अज्ञान) इत्यादि (चिदाभास से बंधा कूटस्थ जिज्ञासु के वचन) मेरा बन्धन छुड़वा दो, तो हमे वेद (निगम) शास्त्र (अगम) द्वारा अनुमोदित कोई छोटे से मार्ग (सेरी) से बन्धन की निवृत्ति होकर बाहर निकलने की सुविधा का दर्शन हो जाय।

इस प्रकार जिज्ञासु शिष्य की अन्तर्मन दृढ़ मुमुक्षावृत्ति देख कर कृपासागर सद्गुरुदेव ने कृपादृष्टि से देखा।

स्पष्टीकरण है कि रचयिता स्वामी श्री अचलरामजी ने अपनी जीवनगाथा के साथ जिज्ञासु जन को विधि संयुक्त सद्गुरु के आगे प्रार्थना की युक्ति का दर्शन करवाया है।

सद्गुरु उपदेश

दया युक्त बोले गुरु पूरा,
सत्य शब्द भाखूं सुन शूरा।
जिस को समझ सकल भ्रम भागे,
अगम देश का मारग जागे ॥२१ ॥

सद्गुरु समर्थ दया सहित बोले–हे शिष्य ! सत्य उपदेश कथन करता हूँ। हे मन को जीतने वाले शौर्य के प्रतीक सुनो ! जिस को श्रवण करके मनन द्वारा समझने से सभी प्रकार के भ्रम भाग जायेंगे अर्थात् निवृत्त हो जायेंगे। आगे मन-वाणी से अवाच्य (अगम) स्थान (पद) का रास्ता उदित हो जाएगा अर्थात् जाग्रत हो जायगा।

शब्द विचार मिटे चौरासी,
सत्य शब्द है सकल प्रकाशी।
सत्य शब्द सब का करतारा,
ब्रह्मादिक का प्राण अधारा॥२२॥

सत्य शब्द के विचार चिन्तन करने से लख चौरासी के चक्कर मिट जायेंगे। सत्य शब्द सर्वसृष्टि का प्रकाशक है। वह सत्य शब्द प्रणव स्वरूप सब का कर्ता-धर्ता अधिष्ठान रूप है। शेष, गणेश, धनेश, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, ब्रह्मा, शिव इत्यादि सर्व देवताओं सहित सब के प्राणों का परम आधार है।

सुर नर मुनि सनकादिक ध्यावे,
शेष गणेश पार नहीं पावे।

सन्त अनन्त रटे दिन राती,
सत्य शब्द है अलख अजाती॥२३॥

देवता-दानव, मानव, ऋषि-मुनि सनकादि (सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार) सभी ध्यान-तप द्वारा अर्जित करते है। जिस प्रणव शब्द का शेष-गणेश इत्यादि समर्थ शक्तिशाली देवता भी पार नहीं पा सकते है। अनन्त सन्तजन जिसको रात-दिन हरदम स्मरण-जप करते रहते है। वह सत्य सनातन शब्द ब्रह्म स्वरूप लखने से परे अलख एवं जाति-वर्ण से अतीत, परब्रह्म अजाति है।

जाति वर्ण जहां नहीं अहंकारा,
ऊँच नीच ले उतरो पारा।
सत्य शब्द जग में ततसारा,
श्री गुरुदेव किया निरधारा॥२४॥

"सत्य शब्द" जाति-वर्ण के अहंकार से रहित है, इसे वर्गविहीन, ऊँच-नीच कुलावतंश में जन्म लेने वाला कोई भी साधारण, उपांसु, मानस विधि से लेकर भवपार उतर जाते रहे हैं। सत्य गुरु स्वरूप शब्द जगत में ततसार तत्त्व रूप है। ऐसा विचार सहित निर्णय विवेचित करके सद्गुरुदेव ने बखान किया।

साधक का अनुभव

गुप्त शब्द सुनायो गुरु मोई,
जांकी विगत कहूं अब जोई।
ऐसा शब्द दिया गुरु मूँगा,
श्रोत्र द्वारा देह में पूगा ॥२५॥

सद्गुरुदेव ने परम गोपनीय शब्द श्रवण कराया, जिसका विस्तृत विवरण देखकर तुम्हें कथन करता हूँ। सद्गुरुदेव ने ऐसा अनमोल शब्द दिया जो श्रवणेन्द्रिय के माध्यम से (मन, बुद्धि, चित्त लगाकर श्रवण करते ही) शरीर में पहुँच गया।

पूगा शब्द किया विस्तारा,
रोकी पांच विषय की धारा।
सत्य शब्द कीनों ललकारा,
कम्पन लगे देह में सारा ॥२६॥

शरीर में शब्द के पहुंचते ही (स्मरण जप) प्रभाव का विस्तार किया और शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध–इन पांचों विषयों की रुचि (धारा) पर रोक लगा दी, इन्द्रिय संयम से अर्थात् संयम के जीवन से शब्द का स्मरण होने लगा।

जब सत्य शब्द की ध्वनि गर्जित होकर ललकार हुई, तब शरीर में रहने वाले समस्त आसुरी सम्पत्ति के दुराचारी शत्रु गण कम्पन से तृसित हो उठे।

गुरु का शब्द ले करूं लड़ाई,
क्षमा बख्तर टोप चढाई।
हो हुशियार देह में आया,
विवेक धनुष पर बाण चढाया ॥२७॥

अब मैं (साधक) गुरु का शब्द लेकर शत्रुगण से लड़ाई करने को तैयार हूँ।.क्षमा का बख्तर (एक प्रकार का कवच जो लड़ाई के समय शरीर-रक्षा के लिये पहना जाता है) पहना और शील (ब्रह्मचर्य–वीर्यरक्षण, वेदाध्ययन, ईश्वर-चिन्तन) धर्म का शीश रक्षा का टोप लगाया।

सावधान हो शरीर में शब्द शक्ति के साथ विवेक धनुष पर प्राण का बाण शब्द फल साधकर निशाना लक्ष्य पर किया।

मोह राजा बड़ो बलवन्ता,
जाके वशि सकल जीव जन्ता।
घट घट राज करे होय निडर,
जाकी फौज महा जोरावर ॥२८॥

मोह (अज्ञान) राजा महा बलवान है, जिसके वशीभूत संसार के जीव-जन्तु मात्र प्राणधारी-देहधारी सभी है। वह हर जीव के देह में निडरता से राज-काज जमा बैठा है और महा प्रभावशाली बलवान है। उनकी बहुत बड़ी जोर जबरदस्त फौज (सेना) है। संसार में बड़ा साम्राज्य, सर्वसमर्थ मालिक मोह (अज्ञान) राजा का है।

विषय इच्छा दे सब जग घेरा,
लख चौरासी गेले गेरा।
जनम जनम को बैरी मेरो,
लख चौरासी दीयो घेरो॥२९॥

इस मोह (अज्ञान) ने संसार के जीवों को विषय की इच्छा देकर पूरे ब्रह्माण्ड को घेर लिया है। सभी जीवों को लख चौरासी के रास्ते डाल कर भवसागर के बीच फंसा लिये है। यह कई जन्म जन्मान्तरों से हमारा वैरी है, इसी ने मेरा घेरा देकर यह लख चौरासी के बीच भ्रमण से मुझे भरमाता रहा।

जिसके संग लड़ाई मेरी,
अब नहिं करूं पलक भर देरी।

सब की खबर लेऊँ इक छिन में,
ऐसी रीस चढी अब मन में।।३०।।

जिस मोह के साथ हमारी लड़ाई है, अब सद्गुरु समर्थ की कृपा से शब्द-साधन मिलने से अब एक पलक भी देर नहीं करूँगा। सब सेना सहित मोह राजा की खबर ले लूँगा अर्थात् एक क्षण में सब का पता लगा लूँगा। कौन कैसा? और कितना बलशाली है? इस प्रकार मन में शब्द शक्ति जगा कर पुरुषार्थ साधकर मन से सावधान हुआ।

हठयोग

रीस चढाय चला मन मांई,
मोह राजा को मार हटाई।
विवेक धनुष पर बाण चढाऊं,
मोह राजा का खोज ऊड़ाऊं।।३१।।

अब पुरुषार्थ करके सम्बल जुटा कर सात्त्विक क्रोध कर मन-मनन में सावधान होकर साधन में आगे बढ़ा और मोह राजा को मार हटाना है, ऐसा निश्चय किया और अब विवेक धनुष पर पवन बाण में शब्द का फल (भाला) लगाकर सर-संधान करूँ। अब मोह राजा का नामों-निशां का खोज (अता-पता) भी खो दूँगा।

स्मरण बाण चला मोह ऊपर,
चक्कर खाय पड़ा भूमि पर।
लागा बाण धरा पर लोटा,
सत्य शब्द की लागी चोटा॥३२॥

विवेक धनुष पर शब्द फर सधा पवन (प्राण) बाण का सर-संधान मोह के ऊपर चला और मोह (अज्ञान) राजा चक्कर खाकर धरा पर गिर गया अर्थात् अस्तित्व खो बैठा।

स्मरण बाण लगते ही धैर्य धरा पर लेट गया अर्थात् हार मान कर अनन्तः नाश हो गया। जब सत्यशब्द के फर का निशान लग जाय, तब कौन बच सकता है?

राजा मरा फौज घबराई,
जलदी भागो जीतां नाई।
पांच पचीस फौज सब भागी,
भया उदास जग से वैरागी॥३३॥

मोह राजा (अज्ञान) के मरते ही सेना घबरा कर भागने लगी और शत्रु दल के सैनिक आपस में कहने लगे कि अब जल्दी भाग निकलो, यहाँ जीत की आशा नहीं है।

पाँच-पच्चीस की फौज के सैनिकों अर्थात् रजोगणु सहित तमोगुण के समूह तात्त्विक सामग्री का अस्तित्व शून्य हो गया। अब साधक संसार से उपरामता लेकर वैराग्यवान हो गया।

'अचलराम' लड़े कोई शूरा,
मोह को मार भया जग दूरा।
सत्य शब्द का किया विचारा,
अन्तःकरण मिथ्या इकसारा॥३४॥

कोई स्थितप्रज्ञ होकर मुमुक्षू अचलराम जैसा किसी शूरवीर ने युद्ध किया और मोह को मार कर जगत से दूर हो गया।

जब सत्य शब्द का तत्त्व चिन्तन करके विचार किया, तब अवगत किया (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) के चारों अन्तःस्थ सतोगुणी सामग्री भी रजो-तमो की भांति इकसार यह भी सर्वथा मिथ्या, नाशवान परिवर्तनशील प्रकृतिजन्य है।

जामे चेती अग्नि ज्वाला,
विषय अंकूर वासना बाला।
आशा तृष्णा चिंता जारी,
ज्ञान अग्नि प्रकटी उर भारी॥३५॥

सत् शब्द के चिन्तन (विचार) से अग्निमय ज्ञान ज्वाला चेतन हुई, जिसने विषय के अंकुरजन्य वासना को जला दिया।

इच्छा (आशा), तृष्णा (ममतामयी वासना) और भूत-भविष्य की व्यर्थ चिन्ता को जलाकर मिटा दी। हृदय में उस विरह ज्वाला ने ज्ञानाग्नि को प्रकट कर दिया।

भया प्रकाश अंधेरा भागा,
असंख्य युगों का सूता जागा।
चेतन हो बन्धन सब तोड़ा,
मोह बली का खुप्पर फोड़ा॥३६॥

ज्ञानाग्नि का प्रकाश होते ही अज्ञान रूपी अन्धकार निवृत्त हो गया और जीव असंख्य युगों से मोह निद्रा में सोया हुआ था, वह जाग्रत हो गया। सावधान (चेतन) होकर सर्व संचित कर्मजन्म कर्म-बन्धन को जला कर नाश किया और मोहबली का शीश तोड़ कर अन्तिम संस्कार कर दिया।

गुरु कृपा ऐसे युद्ध जीता,
'अचलराम' मोहादिक बीता।
मोह माया जग की सब त्यागी,
अब तो सुरत भजन में लागी॥३७॥

सद्‌गुरुदेव की कृपा से इस प्रकार युद्ध को जीत लिया और स्थिरवृत्ति से मुमुक्षू अचलराम के मोह इत्यादि शत्रु बीत गये।

जगत की मोह-माया सर्वस्व का त्याग कर दिया और अब तो सुरत शब्द के भजन (सुमिरण) में लग गई है।

निरभय धुन लागी अब मेरी,
गुरु कृपा मिल गई मोहि सेरी।
सतगुरु चरणां शीश निवाऊं,
बाँधी कमर अगम घर जाऊं॥३८॥

अब हमारी धुन निर्भयता से शब्द-सुरत की एकता में लग गई, सद्‌गुरु कृपा से अन्तर्हित सेरी (संकड़ी युक्ति) मिल गई। सद्‌गुरु चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम करता हूँ। अब कमर बांध कर अर्थात् दृढ़ संकल्प कर आगे की साधना से अगम दुस्तर पद की स्थिति में आगे बढ़ चलूँ। जिस की कोई गम नहीं ऐसे अगम घर (पद) की तरफ जाऊँ।

सोहं शब्द सतगुरुजी दीना,
बिन पग अन्तर मारग लीना।

यह योगी का मारग झीना,
उमड़ा प्रेम रामरस पीना ॥३९॥

सद्गुरु महाराज ने हमे 'सोहम्' शब्द दिया था, जिससे बिना कर्म-पाँव का अन्तर्गत अन्तस्थ साधन पथ का प्रयाण लिया। यह कर्मयोगी का सूक्ष्म मार्ग है। जब साधक के हृदय में प्रेम रस का भाव उमड़ा तब राम रस रमणीय रमता पुरुष (व्यापक) सुमिरण द्वारा प्राप्त अमृत (सुधा रस) को पीया।

शीश उतार कोई जन पीवे,
गुरु गम चले जुगो जुग जीवे।
गुंझ गली में चलना भाई,
शब्द कुंची सतगुरु बतलाई ॥४०॥

सर्वस्व अहंकार का शीश उतार कर कोई भक्त साधक ही मूर्द्धनी से चवता (झरता) अमृत-सुधारस पीता है और इस तरह गुरु की कृपा रहस्य के मार्ग पर जो चलेगा, युगों युगों तक वह जीवित रह कर अमर हो जायेगा।

मन्त्रयोग

सुमिरण युक्ति फेरी माला,
फेरत खुलिया भ्रम का ताला।

भ्रमर गुफा में सुमिरण कीना,
सूक्ष्म मार्ग योग का चीना ॥४१॥

साधारण, उपांसु एवं मानस की युक्ति रहस्य से मणिमाला, करमाला होते हुए मनमाला द्वारा सुमिरण कीया। क्रमशः माला फेरते-फेरते मिथ्या ज्ञान, संशय युक्त सन्देह का भ्रम जड़ा हुआ युगान्तरों का मजबूत ताला था, वह खुल गया अर्थात् भ्रम टूट गया। आगे त्रिवेणी के मूल में त्रिकूटी के आगे भृकूटी और उनसे आगे भ्रमर (भँवर) गुफा में प्रवेश करके सिद्धयोग अर्थात् हठयोग, मन्त्रयोग, राजयोग और लययोग का समूह एक योग में मिलकर स्वयं साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः आगे हठयोग सहित मन्त्रयोग का सूक्ष्म रहस्ययुक्त अति झीना सूक्ष्म मार्ग जानने में आया। इस अवस्था में शब्द मूर्ति गुरु ध्यान गम्य गुप्त-गुणातीत एवं रूपातीत सद्गुरु ही शब्द रूप से मार्गदर्शन स्वतः रूप से करने लगते है।

चीना मार्ग भ्रमर गरणाया,
नाभि कली के ऊपर आया।
भौंरा मस्त कलि पर आई,
सत सुमिरण की धुनि लगाई ॥४२॥

मार्ग जाना और भ्रमर गूंज का गुंजार होने से भंवर गुफा से उठा और वह गुंज नाभि कमल की कली के ऊपर पहुंचा। जीव भ्रमर (भंवरा) नाभि कमल (मणिपूरक चक्र) की कली पर आकर सत स्मरण की ध्वनि (गुंजार) लगा दी।

नाभी कमल पर किया डेरा,
निशि दिन गूंजे भौंरा मेरा।
ऐसे प्रकट भया ओमकारा,
रोम रोम में शब्द गुंझारा॥४३॥

मणिपुर-चक्र (नाभि) कमल पर स्थित होकर निशदिन हमारा प्राण रूपी भ्रमर (भंवरा) भ्रमर गूंज से गुंजार गूँजने लगा। इस भ्रमर (गुंजार सोहम् से ओमकार (ॐ) का प्राकट्य हुआ। जो रोम रोम में शब्द ओम के साथ सोहम् शब्द एकीकरण होकर रंकार गुंजारमय गुंजायमान हुआ।

राजयोग-मन्त्रयोग

सोहं नाद बजा झनकारा,
हरदम श्वास उश्वास उचारा।
नाभि कमल से उठे पवना,
ताके संग करूं नित गमना॥४४॥

जब सोहम् नाद (गूंज) का झणकार गणणण-रणणण बजने लगा। यह शब्द झणकार हरदम श्वास-प्रश्वास के बीच उच्चारण हुआ। जब प्राण नाभिकमल से ऊपर उठा, तब सुरत-शब्द भी उनके साथ ही गमनित हुए।

द्वादश जाय पिछा लोटाऊं,
इडा पिंगला एक मिलाऊं।
दोनों नाड़ी सम कर राखूं,
सुषुमण के घर अमरत चाखूं।।४५।।

नाभि से नासा तक श्वास छियानवें अंगुल, उस नासिका के बाहर बारह अंगुल, जो नासिका के बाहर तक चलते है। वहां तक सुरत-प्राण शब्द के साथ जाकर पुनः वापिस लौटा कर नाभि-मण्डल (मणिपूरक चक्र) पर आकर ठहराता। इस श्वासा के लोम-विलोम (आते-जाते) लेते-छोड़ते हुए इड़ा (गंगा) बायां स्वर और पिंगला (यमुना) दायां स्वर दोनों की साधना करते हुए दोनों को एक मिलाने को हुआ। इडा-पिंगला दोनों नाड़ी को सम-साम्य करते हुए सुषुम्ना (सरस्वती) के घर आकर अमीमय अर्थात् मूर्द्धनी स्थान से झरते हुए अमृत को चख लिया।

सहजे हंस मिलिया त्रिवेणी,
आगे कहूं बात अब झीणी।
ऐसे पुरुष गगन घर पावे,
सुरती शब्द एक लिव लावे ॥४६॥

स्वाभाविक रूप बगैर प्रयास से सहजतया प्राण पुरुष त्रिवेणी (सुषुम्न) स्थान पर शब्द से मिला। अब आगे की बात (साधना) और भी सूक्ष्म है, जो कथन कर रहा हूँ।

इस प्रकार प्राण पुरुष शब्द के साथ गगन-मण्डल (दशवाँ) स्थान (घर) प्राप्त करता है। जहाँ सुरत (वृत्ति) गुरु प्रणव (शब्द) के साथ एकाकार हो लग्नमय लिव लाती है।

राजयोग

सुरती रहे शब्द में लागी,
एक पलक होवे नहीं आगी।
जिमि पनिहारी शिर पर मटकी,
हाथ खुला चले सुरति अटकी ॥४७॥

सुरती (कर्णवृत्ति) शब्द में ऐसे लगी कि एक क्षण भर भी दूर नहीं होती। जैसे पानी भर कर लाने वाली पनिहारिन अपने सिर पर जल से भरी मटकी रख कर खुले हाथों चलती, सामने

से आती या संग चलती हुई अपनी सखियों से वार्तालाप करती हुई जाती है। किन्तु उनकी वृत्ति उस मटकी में अटकी होने से सावधान है, मटकी गिरती नहीं है।

तिमि योगी जन सुरति न टारे,
बोलत चालत ब्रह्म विचारे।
अखण्ड लिव लागी इकतारा,
ध्येय ध्याता मिला इकसारा॥४८॥

उसी तरह योगी पुरुष चित्तवृत्ति को रोकने वाले अपनी सुरति को एक क्षण भी शब्द से हटने नहीं देते। बोलते-चलते प्रतिक्षण ब्रह्मात्म स्वरूप का विचार चिन्तन करते रहते है। जिनकी अखण्ड लिव (लग्न) एकतार (लगातार) लय लगी है। वहाँ ध्येय (ब्रह्म) एवं ध्याता (योगी के प्राण) दोनों इकसार मिलने से ध्येय न अर्थात् ध्याता से ध्येय भिन्न कदापि नहीं होने से ध्यान की गति स्वभावतः विलय हो जाती है।

सुरत शब्द मिल दुरमति भागी,
निश्चल भई चंचलता त्यागी।
ऐसे सहज समाधि लाया,
निर्भय हंस गगन घर आया॥४९॥

सुरता (वृत्ति) शब्द से मिलते ही दुष्ट बुद्धि अर्थात् द्वैत बुद्धि की दुर्मति टूट कर दूर हो गई। तब वृत्ति ने सांसारिक गुणात्मक भाव की समुचित चंचलता का निवारण करके निरोधभाव से निश्चल (स्थिर) हो गई।

इस प्रकार से सहज समाधि का लययोग रूप सविकल्प समाधि में स्थित हुआ और प्राण-पुरुष (हंस) गगन (दशवाँ) स्थान (घर) में पहुँचा।

गगन आके लगाया डंका,
शब्द ब्रह्म मिला हमें बंका।
साक्षी रूप गगन में थाया,
अचरज खेल नजर जां आया॥५०॥

इस प्रकार गगन मण्डल में आकर अहं ब्रह्मास्मि (सोहम्) शब्द का डंका दिया अर्थात् गर्जन-गुंजार किया। जहाँ शब्द ब्रह्म का बड़ा अनुपम एवं टेडा मिलन हुआ। परब्रह्म (निर्गुण), अपरब्रह्म (नित्य-नैमित्तिक अवतार या सद्‌गुरु स्वरूप, किन्तु इन पर-अपर स्वरूप का मिलन शब्दब्रह्म के द्वारा ही होता है।) इस शब्द ब्रह्म का स्वयं परब्रह्म से मिलना चर्चित हुआ है। वहाँ गगन (शिपर) स्थान में साक्षी-द्रष्टा स्वरूप हुआ।

तब महा आश्चर्यजनक खेल चक्षु रहित अन्तर्हित दृष्टि की नजर में आया।

गुप्त महल में प्रीतम परसा,
शब्द स्वरूपी घट में दरसा।
जिसके संग रमे दो परियां,
पांव बिना नाचे तहां श्रियां॥५१॥

गगन-शिषर के गुप्त महल में जीव ने ईश्वर का मिलन किया और शब्द-स्वरूप स्वयमात्म अपने घट (शरीर) में ही दर्शित हुआ अर्थात् दर्शन हुआ। उस ब्रह्म स्वरूप के साथ दो परिया जो बगैर कर्म-पाँव के नाचती हुई दृष्टिगत हुई।

टूंटा मरदंग ताल बजावे,
गूंगा राग छत्तीसूँ गावे।
बहरा सुने रागनी सारी,
अंधा निरखे रचना भारी॥५२॥

कर्मेन्द्रिय के बिना साधन गम्य बेहद (गगन) के ब्रह्मदेश में अनहद दृश्य है। हाथों के बिना मृदंग की ध्वनि, मुख के बिना वाणी की पहुंच के बिना छत्तीसों प्रकार की विविध

रागनियां, श्रवण इन्द्रिय के बिना विषय-विहीन बहरा सुनता है। बहिरंग चक्षुरहित अंधा, जो अन्तर्गत बोद्ध स्वरूप वृत्ति से सारी रचना को साधना के बल से (देखता नहीं) निरखता है।

रचना बिना रचि तहां बाजी,
करे अचम्भा पंडित काजी।
'अचलराम' यह खेल निराला,
पहुंचेगा सतगुरु का बाला॥५३॥

बहिरंग भौतिक रचना के बिना वहाँ अजब बाजी (खेल) की रचना रची। जिसमें केवल बाहरी अक्षरों से इतिहास की भूतकालिक लिखी कथा पुराण या कुरान पढ़ने वाले पण्डित और काजी यह सुनकर आश्चर्य करते हैं।

स्वामी अचलरामजी स्थितप्रज्ञ ज्ञानी कथन करते है कि यह खेल अनोखा, अनुपम, अद्भुत एवं विलक्षण है। वहां तो कोई विवेक, वैराग्य, शमादि षट्-सम्पत्ति सहित मुमुक्षूजन (गुरु का बाला) ही अन्तर्मना पहुँच सकेगा।

उलटा खेल रमे सो योगी,
क्या जाने विषयारस भोगी।

ऐसे हरिजन करत विलासा,
होय अचम्भा बड़ा तमासा ॥५४॥

इस प्रकार से उलटा (विपर्यय-विपरीत) खेल रमण करे, वही योगी पुरुष योगगुरु है। इसे विषय रस के सांसारिक भोग-लिप्सा में बंधे भोगीजन क्या जान सकते है ?

इस प्रकार से ऐसे हरिजन (योगी-भक्त साधक) प्रभु के प्यारे ब्रह्ममय शब्द का मनोविनोदजन्य आनन्द लेते है। अन्य लोगों को श्रवण-ज्ञान से जानकर महान आश्चर्यजनक तमाशा (खेल) सा होता या लगता है।

ज्ञानयोग

सूक्ष्म रहस्य लखा नहीं जावे,
अनुभव बिना कोई नहिं पावे।
आत्म अनुभव होय सो जाने,
जिस से कोई बात नहीं छाने ॥५५॥

यह गुप्त रहस्य अुनभव (साधन गम्य होए बगैर) बिना कोई नहीं प्राप्त कर सकता। हर मानव के द्वारा यह गुप्त-कर्म का रहस्य जाना भी नहीं जा सकता।

जिस योगी को आत्मा का अनुभव हो, वही जान सकता है। उन तत्त्वदर्शी से कोई भी तथ्य की बात गुप्त या अनजानी नहीं है।

'अचलराम' निश्चय कर जानी,
अब आगे की कहूँ सैलानी।
अधर वृक्ष इक अदृश अनूपा,
जिस की कोई छाया न धूपा ।।५६ ।।

स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा स्थितप्रज्ञ वृत्ति से निश्चय करके यह जाना गया। अब आगे की सैलाणी अर्थात् निशानी कथन करके कहता हूँ।

एक आधारहीन अधर वृक्ष (ब्रह्म तत्त्व) है, जो अदृश्य-अदृष्ट और उपमा रहित अनुपम है। जिसकी कोई द्वन्द्वमय छाया या धूप नहीं है।

ऐसो वृक्ष दशों दिश छायो,
धरण गगन बिन अधर रहायो।
पानी बिना रहे नित हरिया,
मुक्ता फल जिस के बहु टिरिया ।।५७ ।।

ऐसा अद्भुत एवं विलक्षण वृक्ष दशों दिशाओं में आच्छादित रूप से गहनता से छाया हुआ है। जो पृथ्वी और आकाश के बिना बगैर किसी आधार के अधर रूप से रहता है।

वह बगैर पानी के भी नित्य सत्य रूप से हरा-भरा रहता है। उस (परब्रह्म) वृक्ष के पंच प्रयोजन युक्त मुक्ता फल अनेक (अगणित रूप से) अनिश्चित रूप से लटक रहे है।

जा फल कारण सब जन ढूंढा,
हिमत बिना चढे कोई मूंडा।
जिस के पेड़ डाल नहीं गोढा,
कैसे चढे अती कर ओढा॥५८॥

जिस मुक्ति फल के कारण सारे जन मानव ढूँढ़ने में लग रहे है। सांसारिक धर्म, अर्थ, कामादि की वांछा की हिम्मत वाले नहीं अर्थात् प्रपंच रहित बगैर हिम्मत वाले निष्पाप युवा पुरुष ही कोई चढ़ता है। जिस वृक्ष के कर्म-उपासना रहित डाल मूल (गौढ़) नहीं है एवं वह नाम-रूप के बिना पेड़ है। अतिशय हठ करके कोई कैसे चढ़ सकेगा ? उस परम पद को हर कोई नहीं पा सकता।

चिंटी का जहां पाँव नहीं ठेरे,
चढा न जाय गिरे बहुतेरे।
'अचलराम' मिले गुरु पूरा,
कोई कोटि में पहुँचे शूरा ॥५९॥

परमतत्त्व ब्रह्म रूप ऐसा अक्षय वृक्ष है, जहाँ पर चिंटी (वृत्ति) का पांव भी नहीं ठहर सकता, तब हर किसी का चढ़ना-पहुँचना तो दुर्लभ से भी दुर्लभ है। कई योगी, ज्ञानी, सिद्ध-साधक अगणित चढ़ते-चढ़ते गिरे भी है, हर कोई चढ़ नहीं सकता। स्वामी अचलरामजी महाराज कथन करते हैं कि कोई किसी को परम समर्थ दयालु, विरक्त (वैराग्यादि युक्त) तपस्वी, ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रौत्रिय (शास्त्रज्ञ) पूरा लक्ष्यधारी सद्गुरु मिल जाय। तथापि करोड़ों ज्ञानी-साधकों में कोई शूरवीर (जितेन्द्रिय, साधनसहित, आसक्ति रहित) ही पहुँच पाता है।

उस तरुवर पर पहुँचे जाई,
उस का नाम रहे जग माँई।
काया पांव पांख बिन उडिया,
दे कीमत गुरु गम से चढिया ॥६०॥

उस ब्रह्म स्वरूप ज्ञान वृक्ष पर कोई जाकर पहुँच जाय, उस का नाम संसार में अमर हो जाता है।

स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों शरीर (काया) शुभ-अशुभ कर्म (पाँव) और सुतेषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा– तीनों प्रकार की वासना (पंख) रहित अर्थात् काया, पाँव, पांख के बिना (उपयुक्त सामग्री से रहित) उडा अर्थात् साधक विवेक-वैराग्य की पंख से सुरत-प्राण को शब्द में लय करके जो उडा। यहाँ शरीर, कर्म, वासना इत्यादि (तन-मन-धन-अहंकार) की कीमत का चुकारा कीया और सद्गुरु की शब्द सेन (युक्तिमय गम) से चढ़ा।

राजयोग

निर्भय हंसा आकर बैठा,
चाखे फल होया अब नेठा।
तोड़े फल युक्ति से खावे,
जन्म मरण में अब नहीं आवे॥६१॥

ब्रह्मत्व वृक्ष पर (यम दण्ड से मुक्त) निर्भयता से हंस (चिदाभास-कूटस्थ सहित जीवभाव गलित लय रूप) पहुँच कर बैठा अर्थात् ब्रह्माकार स्वयं का निश्चय किया।

अब कार्यमुक्त होकर मुक्तानन्द "ब्रह्मानन्द" अक्षयानन्द का फल चख कर निश्चिन्त हो गया। शिवोऽहम्, कल्याणमय (सर्व दुःखों की निवृत्ति सहित तप, ज्ञानरक्षा और विसंवा-दाभाव) के पंच-प्रयोजन की पूर्ति में युक्ति से परमानन्द-ब्रह्मानन्द के फल का आस्वादन लेकर निश्चित-निश्चल हो गया।

अब इस स्थिति से ज्ञान गरिमा के योग को प्राप्त करने वाला जीवात्मा सांसारिक जीवन चक्कर के जन्म-मरण में नहीं आता। क्योंकि जन्म-मृत्यु के कारण रूप अज्ञान-कर्म सहित वासना बन्धन से चिदाभास मुक्त हो गया है।

अक्षय वृक्ष पर निशि दिन वासा,
जीव पीव तां एक प्रकाशा।
निश्चय बात अगम की केहूं,
गुरु मुख हो जिस को फल देहूं ॥६२॥

ऐसे ब्रह्मतत्त्व अक्षय वृक्ष (के कथानक) पर रात दिन निश्चय वास किया। वहाँ जीवत्व एवं ईश्वरत्व भाव का द्वैत निवृत्ति होकर एकत्व, समत्व स्वरूप से प्रकाशमान व्यापकत्व हो गया।

ज्ञानयोग का सहजयोग
जीवन्मुक्त पुरुष के वाक्य

अब निश्चय पूर्वक जो मन, वाणी से अतीत अगम है। उनकी बात कथन करता हूँ। जो साधन-चतुष्टय सहित परम मुमुक्षु (श्रद्धा-विश्वास युक्त) गुरुमुखी (गुरु का शिष्य) हो, उसे ब्रह्मज्ञान का फल दे देता हूँ।

अन्तर लख फिर बाहिर भाखी,
इसी बात का सतगुरु साखी।
हंसा जाय अगम घर पूगा,
सुनं में भानू सहस्त्र ऊगा ॥६३॥

यह सब वास्तविकता अन्तरंग साध्य साधना द्वारा लखता (जान) करके बाहर लोक हितार्थ लौकिकता से कथन किया गया है। इस तथ्यात्मक लेखन के सद्गुरुदेव ही साक्षी है।

इस उपयुक्त निष्ठा से हंस (जिज्ञासु बोध के लिए उच्चरित शब्द 'जाय' का उपयोग किया गया है।) अन्तर्मन के अन्तर्ध्यान की अन्तर्साधान से अगम (ब्रह्म) की निष्ठा (घर) में पहुँचा। उस चेतन शून्य में हजारों सूर्योदय के प्रकाश का उजाला हो गया।

फटिया तिमिर दरसिया देवा,
एक अखण्डी अलख अभेवा।
अनादि पुरुष पुरातन एका,
कर समदृष्टि सकल में देखा ॥६४॥

ब्रह्मत्व के अनन्त सूर्य के प्रभाव से अन्तर्हित आवर्ण-अज्ञानान्धकार फट गया अर्थात् निवृत्ति होने से ब्रह्माकार सच्चिदानन्द का साक्षात्कार हुआ। जो एक है, अखण्ड (अविभाज्य शक्ति) भेदरहित (अभेव) अभेद अद्वय है।

वह अनादि परम पुरुष, त्रिगुणातीत, सनातन-पुरातन एकमात्र अद्वितीय है। सम्यक् (समदृष्टि) भाव से सर्व दृश्य (नाम-रूप) मात्र में एकत्व आतम विभु देखा।

सब में आप निर्लिप्त समाया,
जहाँ नहीं भ्रम कर्म नहीं काया।
नहीं जां ईश्वर नहीं जां दासा,
द्वैत अविद्या भई विनासा ॥६५॥

परम ब्रह्मात्म सर्व में आप ही निर्लिप्त (राग द्वेष आदि से मुक्त-आसक्ति हीन) भाव से समाया हुआ भरपूर है। जहां कोई

किसी प्रकार के भ्रम-कर्म एवं काया अर्थात् कारण सहित कार्य का सर्वथा अभाव है। अद्वय अपार में स्वामी-सेवक, ईश्वर-जीव इत्यादि कोई उपाधि नहीं है। अविद्या विहित द्वैत उपाधि का समूल विनाश हो गया।

अपना आप भरा भरपूरा,
अद्वय अखण्ड निर्मला नूरा।
सुन समान चेतन निज सोई,
सुंन में रहे लिपे नहीं कोई॥६६॥

केवल मात्र ब्रह्म (व्यापक) स्वयं आप भरपूर भरा हुआ है, जो अद्वय, अखण्ड, निर्मल (जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष नहीं है) शुद्ध-पवित्र, विशुद्ध-प्रकाश है। चेतन शून्य (स्वतः निज शून्यवत ही है) जो चेतन शून्याकार होने से कोई कहीं लिपायमान नहीं होता।

उसी पुरुष की सुंन है छाया,
जिस का नाम अविद्या माया।
ता सुंन मांहि सकल प्रपंचा,
चेतन मांहि लेश नहीं रंचा॥६७॥

उस ब्रह्म चेतन पुरुष की शून्य ही छाया है, तमो रूप अविद्या और सतो रूप माया के नाम से जानी जाती है। उसी चेतन में सारा पिण्ड-ब्रह्माण्ड का प्रपंच समाहित है, किन्तु चेतन तत्त्व में उस मायामयी अविद्या का रंच मात्र भी लेश प्रभाव नहीं है।

जिस में काया माया नाहीं,
सुंन धुंन अब कहां ठहराहीं।
ध्येय ध्याता वहां नहीं पावे,
मन पवना का खोज विलावे॥६८॥

जिस (सांकेतिक भाषा) ब्रह्मतत्त्व में काया (तीनों शरीर) के कार्य सहित कारण रूपा माया भी नहीं है। शून्य चेतन में धुन-ध्वनि भी कहाँ ठहर सकेगी?

ध्येय (ध्यान के योग्य बिन्दु) और ध्याता (ध्यान करने वाला) भी वहाँ ब्रह्मतत्त्व में द्वैत से मिलता नहीं है। मन और प्राणों के नामो-निशान का भी पता विलय हो जाता है।

कर्त्ता कर्म नहीं जहां किरिया,
निश्चल आप एक रस भरिया।

ज्ञेय ज्ञाता नहीं जहां ज्ञाना,
'अचलराम' यह पद निरवाना ॥६९॥

कर्ता (कर्म करने वाला), कर्म (व्याकरण में वह शब्द जिनके वाच्य पर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े, जो किया जावे वह कार्य) और क्रिया—किसी कार्य का होना अथवा प्रयत्न किया जाना इत्यादि कुछ भी जहाँ (ब्रह्म तत्त्व में) नहीं है। जो स्वयं आप ही निश्चल रूप से एकरस, जो बदलने वाला नहीं हो, चेतन स्वरूप से सराबोर भरा हुआ है।

जहाँ कर्म, कर्ता और क्रिया अथवा ज्ञेय (वस्तु कथन का ध्येय) ज्ञाता (किसी वस्तु को जानने वाला) और ज्ञान (जिसकी वास्तविक जानकारी हो) ऐसा कोई भी त्रिपूटीजन्य बोध नहीं है। स्वामी अचलरामजी महाराज स्थितप्रज्ञ तत्त्वदर्शी के इस पद अर्थात् ब्रह्मतत्त्व की स्थिति सर्वदा मायिक प्रपंच (बान) से रहित अवाणी नित्य निर्वाण ही है।

सुरति शब्द पहुँचे नहीं जाहीं,
मन पवना की कौन चलाहीं।
जहां नहीं बुद्धि चित्त अहंकारा,
पांच विषय नहीं जगदाकारा ॥७०॥

जहाँ सुरती-शब्द, मन-पवन की सर्व गति पहुँच नहीं सकती, वह अचिन्त्य, अवाणी होने से किसी का प्रभाव नहीं चलता अर्थात् कोई भी पहुँच नहीं सकता।

जहाँ मन द्वारा कल्पना विभाजन के बुद्धि, चित्त, अहंकार भी नहीं है। जगत् के आकार के उपादान पांच तन्मात्रा अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध भी नहीं है।

तीन अवस्था वहां नहीं दरसे,
तुरिये चौथी कहो कौन परसे।
जहां नहीं बंध मुक्त का फन्दा,
दिवस रैन सूर नहीं चन्दा॥७१॥

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति की उपाधि से होने वाले देश-काल-वस्तु अभिमानी भी वहां दर्शित नहीं होते। तब दृश्य रहित चौथी तुरिय (द्रष्टा) का कोई महत्त्व नहीं रहा। जहाँ बन्ध-मुक्त का कोई फन्द (जाल) नहीं है। दिन-रात के उपाधि कारण सूर्य-चन्द्र भी नहीं है।

नहीं जहां पिण्ड नहीं ब्रह्मण्डा,
चौदह लोक नहीं नव खण्डा।

नाम रूप की गति बिलानी,
जैसे लवण मिला गल पानी ॥७२॥

अद्वय, अखण्ड, ब्रह्मतत्त्व में पिण्ड-ब्रह्माण्ड एवं चौदह लोक या सातद्वीप, नौखण्ड के समस्त नाम रूप की गति विलय हो गई। जैसे नमक जल के साथ गलकर जलमय हो जाता है।

निष्परपंच वार नहीं पारा,
'अचलराम' अलख निराधारा।
सब से अतीत स्वयं प्रकाशी,
'अचलराम' आप अविनाशी ॥७३॥

निष्प्रपंच परम तत्त्व वार-पार (ओर-छोर) रहित अर्थात् सीमांकन रहित, किनारे बिना जो चलायमान नहीं है अर्थात् जो अचल रमणीय रमता राम है, वह लखने-जानने से परे अलख है। विवेक के आधार चिन्तन-मनन एवं अध्यस्त-अधिष्ठान से रहित है।

सर्वातीत स्वयं प्रकाशित प्रकाशमान है। स्वामी श्री अचलरामजी महाराज कथन करते है कि परब्रह्म अचल, रमता राम, स्वयं, आप, विनाशरहित, अविनाशी है।

आपो आप और नहीं कोई,
'अचलराम' एक नहीं दोई।
अब क्या कहूँ और नहीं पावे,
स्व-संवेद कह्यो नहीं जावे॥७४॥

अपना आप है और अन्य कोई नहीं, अचलराम स्वरूप की एकमात्र स्थिति में अपेक्षाकृत एक या दो भी नहीं है, जो चलायमान रहित रमता पुरुष चेतन है।

अब आगे कथन करके क्या कहा जाय, वह परब्रह्म स्वयं ज्ञानमय वेदरूप संवेद है। उसे किसी शब्दों से तोला नहीं जाता।

कैसे कथूं अब अकथ कहानी,
अपनी बात आप ही जानी।
'अचलराम' नहीं गुप्त विख्याता,
गूंगे गुड़ का गूंगा ज्ञाता॥७५॥

अब अकथ कहानी का कथन कैसे किया जाय ? अपनी बात को आप ही जानता है। स्वामी अचलरामजी महाराज कथन करते है कि परम सिद्धान्त न गुप्त है और विख्यात (प्रसिद्ध) है। जैसे गूँगा व्यक्ति गुड़ का स्वाद बखान करके नहीं बता सकता, वह गूँगे का स्वाद गूँगा ही जाणणहार है।

दोहा छन्द

आ सैलानी अगम की, सीखे सुने विचार।
सांझ सवेरे पाठ कर, बिन परिश्रम हो पार ॥७६॥

यह सैलानी (निशानी) अगम देश (ब्रह्म स्थिति) की है। यदि कोई सीख (स्मृति पटल) करके या श्रवण करके विचारमय चिन्तन करे और सुबह-शाम (सन्ध्या-समय) पाठ (स्वाध्याय) करे तो बिना परिश्रम किये ही ब्रह्मतत्त्व से भवपार हो जायगा।

सैलानी सतलोक की, देवे ब्रह्म मिलाय।
षट् दर्शन में सुहावनी, जती सती मन भाय ॥७७॥

यह सैलाणी सतलोक (ब्रह्म देश) की है, जो ब्रह्म तत्त्व को मिलाने वाली है। षड्दर्शन (योगी, जंगम, सेवड़ा (जैन), संन्यासी, दरवेश (फकीर) और ब्राह्मण (विद्वान्), तत्त्वदर्शी इत्यादि सब के मन भाविनी-सुहावनी है, जो यति (ब्रह्मचारी) सती (गृहस्थ) सब के मन भावित सुखदाई है।

अगम निगम अनुसार कहि, यह अनुभव का बैन।
'अचलराम' निश्चय कियां, भरम मिटे सुख चैन ॥७८॥

यह विधि संगत सिद्धान्त षट्शास्त्र एवं वेद के नियमानुसार

कथन के साथ साधना से प्राप्त होने वाले अनुभव तथ्यों की वाणी (वचन) है। जो कुछ कथनकर्ता अचलरामजी महाराज द्वारा किया गया चिन्तन पाया, स्थितप्रज्ञ का निश्चल निश्चय है। जो जानने-पढ़ने और साधना में प्रयुक्त करने से भ्रम निवृत्ति करके अमन चैन के परमानन्द की प्रप्ति कारक है।

स्वामी अचलरामजी महाराज कथन करते हैं कि—

पक्षपात यामें नहीं, आत्म सब को एक।
'अचलराम' सोई लखे, जिस को होय विवेक ॥७९॥

सर्व मत पंथ संसार में सब का चेतन ब्रह्म एक ही स्वयमात्म स्वरूप है। इस में कोई कुछ भी पक्षपात नहीं है। जिस के हृदय में विवेक हो, वही जो स्थिर बुद्धि का मुमुक्षू हो, इसे वही जान सकेगा।

सोरठा-छन्द

प्रथम योही विवेक, सच्चा सतगुरु खोजिये।
नहीं तो मत ले भेख, याते अच्छी गृहस्थ है ॥८०॥

सब से पहले मानव में यही विवेक होना चाहिए कि ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रौत्रिय, विरक्त, कृपालु इत्यादि लाक्षणिक सच्चे

सद्गुरु की खोज-प्राप्ति करनी चाहिए। अन्यथा घर-बार छोड़ कर कायर की तरह भेष मत धारण करो। क्योंकि इस व्यर्थ के मंगतापन भेष से तो गृहस्थ धर्म ही ठीक है।

गुरु का रूप अनेक, बाना धारी जगत में।
ब्रह्म निष्ठ गुरु पेख, आप ब्रह्म शिष्य को करे ॥८१॥

वैसे संसार में बानाधारी (भेषी) गुरु के सात्त्विक (देव-पूजा), राजसी (कर्मदेव पूजन), तामसी (भूत, प्रेत, पितर पूजा आदि) अनेक रूप है। सद्गुरु ऐसे ब्रह्मनिष्ठ, शास्त्रज्ञ देखो कि स्वयं तत्त्वज्ञानी हो और शिष्य को भी संशय रहित शंका निवृत्ति से ब्रह्मतत्त्व की प्राप्ति करवा दे।

वक्ता सारासार, जीव ब्रह्म की एकता।
काटे भेद विकार, ता गुरु का लक्षण यह ॥८२॥

सत्य-असत्य, सार-असार कथन करने में शास्त्रज्ञ (समर्थ) हो। जीव-ब्रह्म की एकता का अद्वय ज्ञान दे। भेदग्रन्थी एवं दुर्व्यसन-अन्तर्विकारों की निवृत्ति करे। उस सद्गुरु के यह लक्षण है।

सो गुरु परम उदार, और जगत में ठीक है।
बाने को नमस्कार, कारज तिन ते नहीं बने ॥८३॥

वह सद्गुरु हृदय के परम उदार है और अन्य तो जगत् में सब ठीक है। भेष (बाने) को प्रणाम है, किन्तु उनसे कार्य सिद्ध नहीं हो सकते।

करे न खींचा तान, लीन रहे निज रूप में।
'अचलराम' पहिचान, उस गुरु को शरणो लियो ॥८४॥

सांसारिक या शास्त्रीय वाद-विवाद की खैंचातानी नहीं करे। केवल मात्र स्वयमात्म स्वरूप के आनन्द में नित्य लीन रहे। स्वामी अचलरामजी महाराज कथन करते है कि हमने सद्गुरु की पहचान कर ऐसे ही उन सद्गुरु का शरणापन्न लिया।

दोहा-छन्द

सम्वत् उनीसे सौ सई, वर्ष अठावने मांय।
आषाढ शुद्धि चतुर्दशी, सतगुरु पकड़ी बांय ॥८५॥

विक्रम संवत् 1958 आषाढ सुदि 14 में सद्गुरु ने मस्तक पर वरद हस्त दे कर बाँह पकड़ ली।

बांह पकड़ गुरु काढियों, बह्यो जात संसार।
तत्व बताया अगम का, पूर्ण ब्रह्म अपार ॥८६॥

संसृति के बीच संसार सागर में बहता-बह जाता, किन्तु

सद्गुरुदेव ने अपनत्व से अंश जान के बाँह (भुजा) पकड़ कर बाहर निकाल लिया और पूर्ण ब्रह्म अपार जो अगम (दुस्तर) है, ऐसे परम तत्त्व का साक्षात्कार करवा दिया।

उलट आप निश्चय कियो, केवल पद निरवान।
गुरु 'सुखराम' पूरा मिला, दिया जु अनुभव ज्ञान ॥८७॥

अपने आप को उलट (परिवर्तन) करके अपने भीतर ही अपना निश्चय किया, जो केवल शुद्ध निर्वाण (कल्याण) पद है। समर्थ सद्गुरुदेव स्वामी श्री सुखरामजी महाराज मिले। जिन्होंने साधन सम्पन्न अनुभव ज्ञान प्रदान किया।

सार अंश सब को लख्यो, षट् मत वेद पुरान।
जिन जान्यो वो आतमा, सब की पड़ी पिछान ॥८८॥

षड्मत दर्शन एवं शास्त्र वेद, अष्टादश पुराण, सभी के सार अंश तथ्य सिद्धान्त को जाना। जिन ऋषि-मुनि-महात्मा जनों ने आत्म साक्षात्कार किया, उन सभी की पहचान हुई।

सोरठा-छन्द

आ सैलानी परमान, श्रुति स्मृति सब ऐसे कहे।
रस्ता अनेक पिछान, सिद्धान्त सब का एक ही ॥८९॥

इस सैलानी (निशानी) की यही प्रामाणिकता है कि श्रुति-स्मृति ग्रन्थ सब इसी सिद्धान्त को एकसे ही यथावत कथन करते है। साधना के कर्म, भक्ति, ज्ञान इत्यादि अनेक रास्ते योग मार्ग कथन किये हैं। किन्तु सिद्धान्त, रहस्य सार सब का एक ही है।

सिद्धान्त सभी का जान, सैलानी पीछे कही।
अगम निगम परमान, 'अचलराम' साखा कहै ॥९० ॥

सर्व मत-पन्थ शास्त्र-सिद्धान्त सभी के जानने के बाद सैलानी का कथन किया। चार वेद, छः दर्शन शास्त्र के प्रमाण सहित स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा स्थितप्रज्ञ का यह साक्ष्य कथन हुआ।

पहुँचे हो परतीति, सैलानी गुंझ आदि की।
परम्परा की रीति, गुरु मुख बिन पावै नहीं ॥९१ ॥

यह सैलानी आदि-अनादि रहस्य से गुंज (गुप्त) है, जो पहुँचने वाले को ही विश्वास होगा। किन्तु यह सद्गुरु पंथ की पारम्परिक रीति नीति है, जो सद्गुरु की शरणागत हुए अर्थात् सद्गुरु के सम्मुख हुए बिना नहीं पा सकता।

गुरु मुख श्रद्धा होय, दृढ वैराग्य अभ्यास नित।
विषय इच्छा दे खोय, नित्यानित्य विचार कर॥१२॥

सद्गुरु सान्निध्यवास, गुरु सम्मुख श्रद्धा युक्त हो, चित्त में दृढ़ वैराग्य हो और नित्य अभ्यास बनता-करता रहे। पाँचों विषय समुचित इच्छा की निवृत्ति हो जाय। तब नित्य (सत) और अनित्य-असत क्या है ? यह विचार सहित चिन्तन करे।

हृदय विमल जब होय, शुद्ध विचार तब प्रकटे।
लखे सैलानी सोय, गुरु 'सुखराम' की कृपा से॥१३॥

जब हृदय पवित्र हो जाय, तब शुद्ध विचार उदय अर्थात प्रकट हो। सुखराम अर्थात् सुखदाता राम के समान कृपासागर सद्गुरु-कृपा से कोई सैलानी के वृत्तान्त को जान सकते है।

आदि रु अन्त विचार, भिन्न भिन्न अंग याके सभी।
जीव होय निरधार, अक्रिये निश्चल सदा॥१४॥

सैलानी के भिन्न-भिन्न सभी अंगों का आदि से अन्त तक पूर्णतः विचार किया जाय। तब इस जीव को विवेचन सहित विवेक हो तब निर्णय सहित निश्चय करे कि यह ब्रह्म तत्त्वमयी अद्वय आनन्द अक्रिय और नित्य है।

कुण्डलिया-छन्द

हरिराम ज्ञान गुरु गादि, सदा अखण्ड अभंग।
तिन के शिष्य जीयाराम जु, निश्चल मति अथंग॥
निश्चल मति अथंग, तिन के जु शिष्य सुखरामा।
जीवां तारण जहाज, महा निज सुख के धामा॥
'अचलराम' सुख शरण में, सैलानी कहि अद्वय खरि।
'हरिराम' ज्ञान गुरु गादि, सदा अखण्ड अमर रहे हरि॥९५॥

रचयिता श्री अपनी गुरु-परम्परा में विरक्त गद्दी जोधपुर की गुरु-प्राणाली कथन करते हैं कि स्वामी हरिरामजी महाराज की गुरु ज्ञान गादी (ज्ञान रूप गुरुत्व भरी स्थापित) विरक्त गद्दी पर उनके परम शिष्य स्वामी जीयारामजी महाराज जो निश्चल मति-गति के अथाह गम्भीर दयालु हुए। उनके शिष्य स्वामी सुखरामजी महाराज जो कि जीवों के तारणहार जहाज के समान, महान सुख के धाम है। ऐसे सुखरामजी महाराज की शरण में रह कर स्वामी अचलरामजी महाराज ने अद्वय अनुपम सैलानी का कथन किया। इसके द्वारा हरिरामजी महाराज की कृपा से ज्ञान गादी नित्य अखण्ड अविरल अमरत्व प्राप्त करेगी।

टीकाकार कृत दोहा-छन्द

परम गुरु अचलरामजी, सतगुरु उत्तमराम।
'रामप्रकाश' टीका करी, अद्वय सैलानी नाम ।।96।।

दादागुरु (परमगुरु) स्वामी अचलरामजी महाराज के परम शिष्य और टीकाकार के सद्गुरु स्वामी उत्तमरामजी महाराज। उनके शिष्य संत रामप्रकाश द्वारा अद्वय सैलानी नामक पारम्परिक तत्त्वज्ञान की भावार्थी टीका लिखी गई।

युगल सहस ऋतु सिद्धि में, मीन मास शनिवार।
टीका अष्ठमी को लिखी, 'रामप्रकाश' सुविचार ।।97।।

इतिश्री ज्ञानी मन भावन- जिज्ञासु चित्त सुहावन
अचल सैलानी भावार्थी टीका समाप्त

गुरु प्रणालिका परिचय

कुण्डलिया छन्द

हरिराम परब्रह्म नमो, जीयाराम जगदीश।
बनानाथ हरि प्रकटे, हरि सुखरामा ईश॥
हरि सुखरामा ईश, युगल मत भेद न होई।
अचलराम नवलेश, फूल[1] रु उत्तम[2] दोई॥
नारायण[3] व दयाराम[4] अचल शिष्य साशीश।
उत्तम विवेक वैराग्य वर, ज्ञान धार बह ईश॥

— स्वामी दयारामजी

हरिराम गुरुदेव को, जीयाराम प्रणाम।
सुख सागर सुखरामजी, अचलराम निष्काम॥
अचलराम निष्काम, अद्वय अनन्त अपारा।
उत्तमराम सोई तत्त्व लहि, भ्रान्ति भेद विडारा॥
'रामप्रकाश' निष्ठा करी, गुरु गद्दी विश्राम।
बारम्बार कर जोड़ के, नमो नमो हरिराम॥

उत्तम साहित्य-प्रकाशन सूची

- ❖ आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोधग्रन्थ
- ❖ सन्तदास अनुभव विलास (गुरु स्मृति पाठ)
- ❖ हरिसागर (समस्त ज्ञानों का भण्डार) टीका सहित एवं मूल
- ❖ वाणी प्रकाश (छः महात्माओं की अनुभव वाणी)
- ❖ अचलराम भजन प्रकाश (तीन साईज में)
- ❖ सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश
- ❖ आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष (परिशिष्ट भाग)
- ❖ हिन्दू धर्म रहस्य
- ❖ उत्तमराम भजन प्रकाश
- ❖ अवधूत ज्ञान चिन्तामणि
- ❖ भारतीय समाज दर्शन
- ❖ विश्वकर्मा कला दर्शन
- ❖ नशा खण्डन दर्पण
- ❖ रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह
- ❖ रामायण मन्त्र उपासना
- ❖ पिङ्गल रहस्य (छन्द विवेचन)
- ❖ उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि (मूल ७५० दोहा)
- ❖ उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली (सरल टीका सहित)
- ❖ रामप्रकाश शब्दावली (सचित्र)
- ❖ उत्तमराम अनुभव प्रकाश
- ❖ रामप्रकाश शब्द सुधाकर (सचित्र) दो भाग
- ❖ गूढ़ार्थ भजन मञ्जरी

- अपूर्व एक लाख वर्षीय कैलेण्डर
- रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग)
- उत्तम बाल योग रत्नावलि (तीन भाग)
- सन्ध्या विज्ञान
- सुगम चिकित्सा – प्रथम भाग
- सुगम चिकित्सा – द्वितीय भाग
- सुगम उपचार दर्शन (देवीदान औषधि कल्पतरु)
- तिलक प्रबोध दर्शन (तीन भाग)
- उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका
- स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
- वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन
- दैनिक चिन्तन दैनन्दिनी
- रामप्रकाश भजन प्रभाकर
- कामधेनु
- सर्वदर्शन वाद कोश
- अचलराम ग्रन्थावली (1–2–3 भाग)
- नवलाराम भजन विलास
- नित्य पाठ - नव स्तोत्र
- रामदेव ब्रह्म पुराण
- रामदेव गप्प दर्शन
- अत्येष्टि संस्कार (शव यात्रा)
- उमाराम अनुभव प्रकाश
- सत्यवादी वीर तेजपाल
- गोरख बोध वाणी संग्रह

उतम प्रकाशन का उत्तम साहित्य मिलने के स्थान—

1. **उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)**
   कागामार्ग ,नागौरी गेट, जोधपुर-342006 (राज.)

2. **रामप्रकाश आश्रम**
   रामधोरा, पो.गठीलासर वाया नागौर (राजस्थान)

3. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन**
   विष्णु फैक्ट्री के सामने, गोविन्दसिंह कॉलोनी,
   श्रीविजयनगर, श्रीगंगानगर (राज.)

4. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन**
   रायसिंहनगर रोड, 87 जी.बी., अनूपगढ़ (श्री गंगानगर)

5. **रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार**
   रत्नबिहारी पार्क के सामने, स्टेशन रोड, बीकानेर (राज.)

6. **बृजलाल पटवारी**, गांव-पोस्ट ताखरांवाली,
   वाया गोलूवाला, श्री गंगानगर (राज.)

7. **शान्ति भवन**, रेल्वे स्टेशन के सामने,
   उत्तर दिशा, राजलदेसर, जिला चूरू (राज.)

8. **किताबघर**, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

9. **केवलराम गंगाराम बुकसेलर**
   4, व्यास मार्केट, आनन्द सिनेमा के सामने, जोधपुर (राज.)

10. **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
    सैण्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर (राज.)

तत्त्वदर्शी स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज
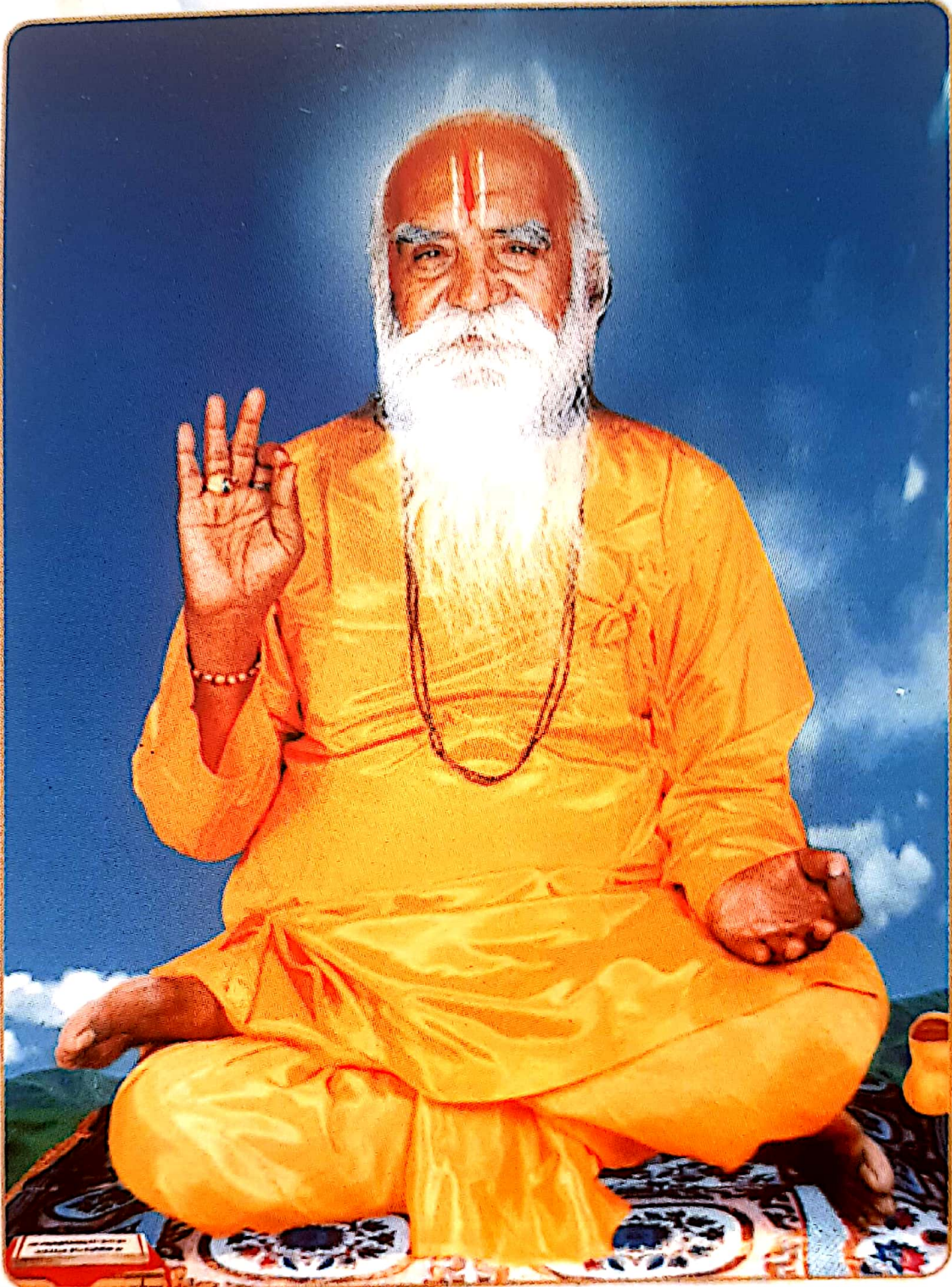
श्रीमहन्त : उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर (राज.)

अवधूत
गीता ज्ञान दर्शन

परमगुरु श्री स्वामी
अचलरामजी महाराज
एवं शिष्य
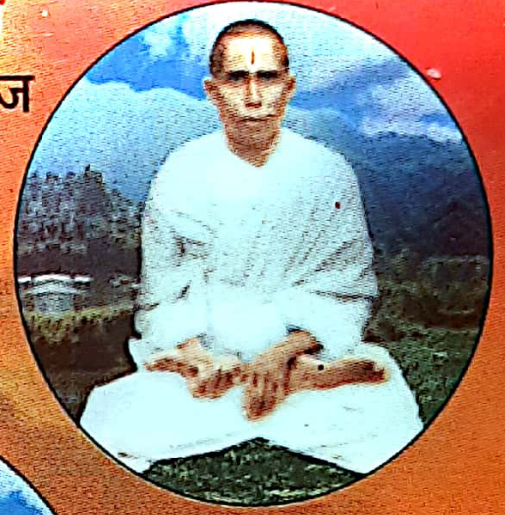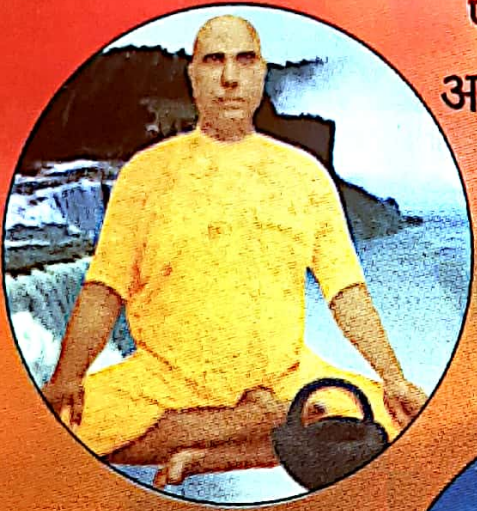
श्री स्वामी फूलरामजी
महाराज

श्री स्वामी उत्तमरामजी
महाराज
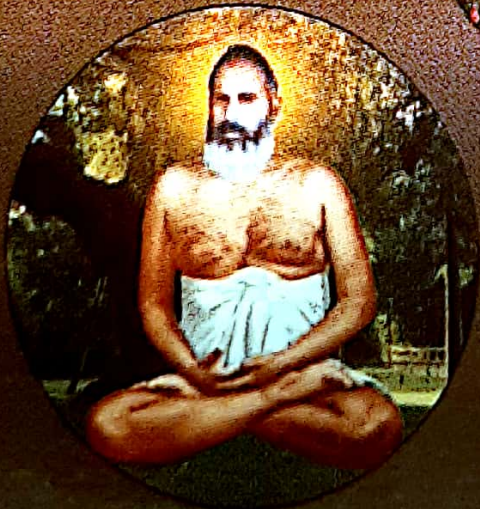
सद्गुरुदेव
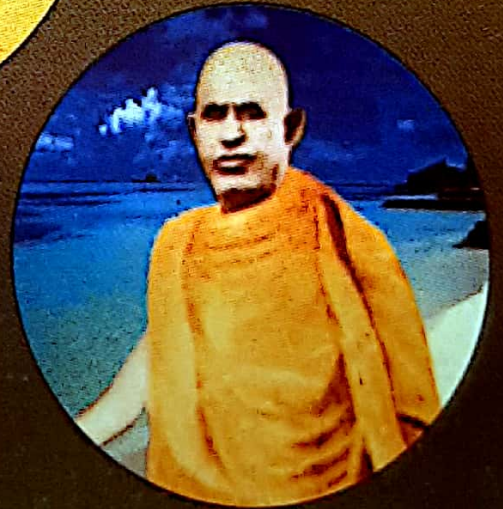
श्री स्वामी अचलनारायणजी
महाराज

श्री स्वामी दयारामजी
महाराज